GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

GNJPC

वार्षिकांक 2024

'मुक्त स्वर'

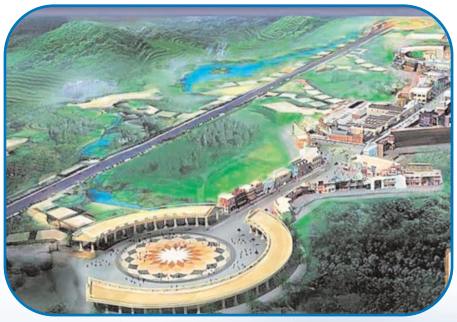

Ideal atmosphere for multifacted growth

Come... experience it

Not just industry. Also commerce, institutions, living, education, sports, health, leisure, retail. Even the latest culturaland arts centres. In Greater Noida, it's all world class. And within reach, Enveloped in an atmosphere that's pollution free- amid growing greeners. Underlining holistic standards of living.

Facets of Greater Noida

Excellent Connectivity: • In proximity of two national and two state highways • Approachable from two 6-lane expressway • Intersection of Eastern and Western Freight Corridors • 20mins from proposed Jewar International Airport • Two metro lines will connect the city to Delhi and IGI Airport • 50 mins from Indira Gandhi International Airport

Meticulously planned with a host of international level facilities: • Weil-laid sewerage system • Drainage & rainwater harvesting • Water supply network • 24x7 uninterrupted power supply • Convergence network Plan Solid waste management plan

Equipped with robust and modern infrastructure for urban and social sector: • Ecologically Sensitive Areas • Spine of 130 mt. wide road • Ground Water Recharge Areas • Interlinked Greens • Energy efficient design & waste treatment • Solid Waste Management

Ease of doing business with transparency and efficiency: • Nivesh Mitra - A friendly single-window centralised portal & mobile application for investment: **www.niveshmitra.up.nic.in**

Greater Noida has become a showpiece of urban development with well-planned commercial, institutional, industrial residential and other areas of gainful living, employment and investment. Investors in any of a multitude of options have easy access to the Greater Noida Industrial Development Authority and will find that the terms of business are most attractive. Thus, this fast-developing city with a pollution-free environment has become a magnet for those seeking better living, working and investment opportunities.

Greater Noida Industrial Development Authority

Plot No. 01, Knowledge Park-04, Greater Noida 201308, Dist. Gautam Budh Nagar., U.P.
Helpline Center No.: 0120-2336046, 2336047, 2336048, 2336049
Ph.: 0120-2336030-33, E-mail: authority@gnida.in, Website: www.greaternoidaauthority.in

Follow us on
/OfficialGNIDA

अंदर के पेजों में

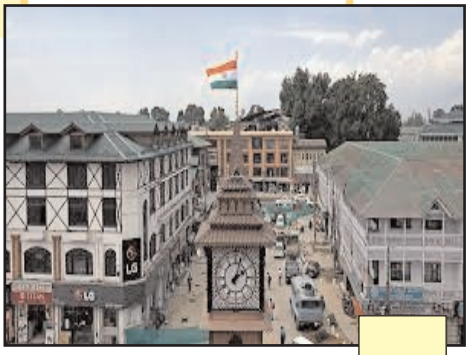

कश्मीर : कश्यप ऋषि, आतंकवाद, वर्तमान दौर 06

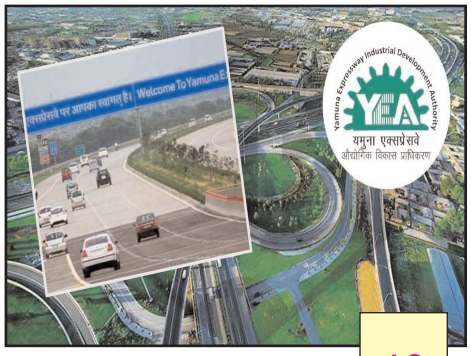

दुनिया का सबसे विकसित शहर होगा नोएडा 10

मीडिया क्रांति : एआई के साथ पत्रकारिता का भविष्य 14

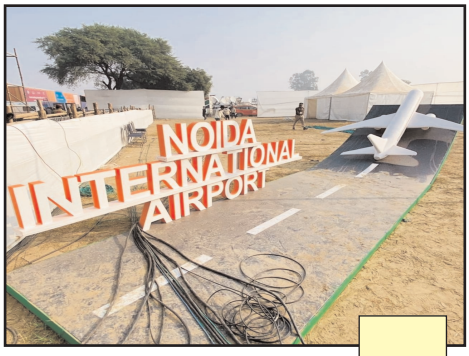

एक सिक्के के दो पहलू.. विकास और विनाश 18

ग्रेटर नोएडा वेस्ट..बढ़ती आबादी या बर्बादी 22

'क्या है डी.एन.टी' 25

गौतम बुद्ध नगर : एक ऐतिहासिक संघर्ष से लेकर आधुनिक विकास... 30

जिन्दगी में सब अच्छे के लिए होता है 41

दुनियाभर पर मंडराता प्रदूषण का खतरा 43

संपादकीय

पत्राकारिता के पहलुओं को जाने?

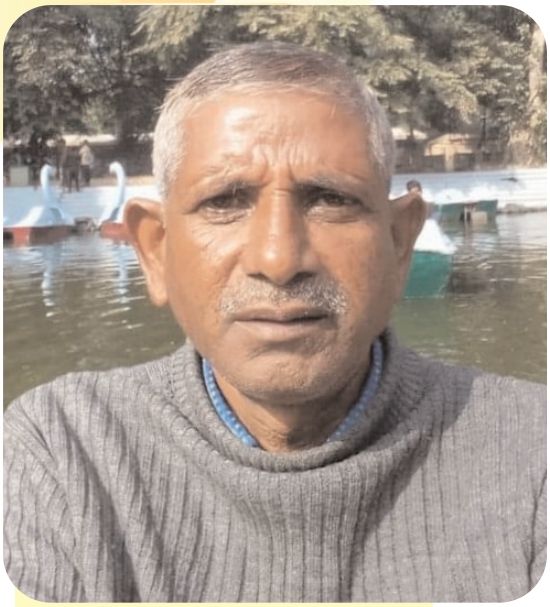

शीशपाल सिंह

(संपादक)

प्रकाशन समिति

अध्यक्ष	:	शीशपाल सिंह
उपाध्यक्ष	:	जेपी शर्मा
सदस्य	:	राजेश गौतम
		नितिन शर्मा

पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशन का तात्पर्य यह नहीं है कि इन तथ्यों और सामग्री की मौलिकता, विधिकता और प्रभावों से संपादक, सह-संपादक गण, ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब या प्रकाशन समिति सहमत है। किसी भी प्रश्न विवाद एवं समीक्षा के लिए लेखक स्वत: जिम्मेदार होंगे।

www.gnpressclub.com
gnpressclub@gmail.com
@gnpressclub

अपने रोजमर्रा के जीवन में एक आम दिन की कल्पना कीजिए। दो लोग आसपास रहते हैं और लगभग रोज मिलते हैं। कभी सुबह में, कभी राह चलते और कभी एक-दूसरे के घर पर। भेंट से पहले के कुछ मिनट की उनकी बातचीत पर ध्यान दीजिए। हर दिन उनका पहला सवाल क्या होता है? 'क्या हालचाल है?' या 'कैसे हैं?' या फिर 'क्या समाचार है?' रोजमर्रा के इन सहज प्रश्नों में ऊपरी तौर पर कोई विशेष बात नहीं दिखाई देती। इन प्रश्नों को ध्यान से सुनिए और सोचिए। इसमें आपको एक इच्छा दिखाई देगी। नया और ताजा समाचार जानने की। पिछले कुछ घंटे का हाल जानने की। या बीती रात की खबरें। कल से आज के बीच या कुछ घंटों के अंतराल में आए बदलाव की जानकारी। यानी हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों और सहयोगियों से हमेशा उनका कुशलक्षेम या उनके आसपास की घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। कहने की जरूरत नहीं है कि अपने आसपास की चीजों की, घटनाओं और लोगों के बारे में ताजा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्राकारिता का मूल तत्त्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की भी जरूरत नहीं रहेगी। पत्राकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ। वह आज भी इसी मूल सिदांत के आधार पर काम करती है।

समाचार क्या है?

इतना तो आप जान ही गए होंगे कि हर सूचना समाचार नहीं है यानी हर सूचना समाचार माध्यमों में प्रकाशित या प्रसारित नहीं होती है। ऐसा क्यों हैं? आखिर हर घटना, समाचार क्यों नहीं है? वह हर बात समाचार क्यों नहीं है जिसवेफ बारे में हमें पहले जानकारी नहीं थी? क्या एक-दूसरे का हालचाल और खोज-खबर लेना समाचार नहीं है? क्या वह सब समाचार नहीं है जिसके बारे में लोग जानना चाहते हैं या जिसके बारे में लोगों को जानना चाहिए? या फिर समाचार वही है जिसे एक पत्राकार समाचार मानता है? निश्चय ही, मित्रों, रिश्तेदारों और सहकूमयों से आपसी कुशलक्षेम और हालचाल का आदान-प्रदान समाचार माध्यमों के लिए समाचार नहीं है। इसकी वजह यह है कि आपसी कुशलक्षेम हमारा व्यक्तिगत मामला है। हमारे नजदीकी लोगों के अलावा अन्य किसी की उसमें दिलचस्पी नहीं होगी।

दरअसल, समाचार माध्यम कुछ लोगों के लिए नहीं बल्कि अपने हजारों-लाखों पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों के लिए काम करते हैं। स्वाभाविक है कि वे समाचार के रूप में उन्हीं घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं को चुनते हैं जिन्हें जानने में अधिक से अधिक लोगों की रुचि होती है। यहाँ हमारा आशय उस तरह के समाचारों से है जिनका किसी न किसी रूप में सार्वजनिक महत्त्व होता है। ऐसे समाचार अपने समय के विचार, घटना और समस्याओं के बारे में लिखे जाते हैं। ये समाचार ऐसी सम-सामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित होते हैं जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका अधिक से अधिक लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। इसके बावजूद ऐसा कोई प् फार्मूला नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जाए कि यह घटना समाचार है और यह नहीं। पत्रकार और समाचार संगठन ही किसी भी समाचार के चयन, आकार और उसकी प्रस्तुति का निर्धारण करते हैं। यही कारण है कि समाचारपत्रों और समाचार चैनलों में समाचारों के चयन और प्रस्तुति में इतना प्रकाशित दिखाई पड़ता है। एक समाचारपत्र में एक समाचार मुख्य समाचार ;लीड स्टोरी हो सकता है और किसी अन्य समाचारपत्र में वही समाचार भीतर के पृष्ठों पर कहीं एक कालम का समाचार हो सकता है। एक टेलीविशन चैनल के लिए किसी नेता के जन्मदिन का समाचार पहला मुख्य समाचार हो सकता है तो संभव है कि कोई अन्य चैनल रुस में आर्थिक विकास को लेकर दिए गए प्रधानमंत्री के बयान को अपनी मुख्य खबर बना सकता है।

'सकारात्मक सोच'

नरेंद्र भाटी

(अध्यक्ष)
ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब

'मुक्त स्वर के प्रथम वार्षिकांक के लिए आप सभी को बधाई'

लोकतांत्रिक देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिए मीडिया को चौथे स्तंभ के रूप में जाना जाता है। मीडिया की भूमिका संवादवहन की होती है वह समाज के विभिन्न वर्गों, सत्ता, केंद्रों, व्यक्तियों और संस्थाओं के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है। ऐसे में मीडिया में सकारात्मक सोच का होना बहुत जरूरी है। सकारात्मक भूमिका के साथ मीडिया व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक सोच का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि सोच एक ऐसा काम है जो हम दिन में भी करते हैं और तब भी करते हैं जब हम सोते रहते हैं। विचार व्यक्ति के कभी नहीं रुकते हमारे जीवन में एक भी क्षण ऐसा नहीं होता जब हम ऐसा नहीं कर रहे हो। जीवन में सफल बनने के लिए हमें वास्तव में किसी भी चीज से ज्यादा इस बात पर महारत हासिल करने की जरूरत है कि हम क्या सोचना है और क्या नहीं। सोच हमें संतुष्ट या निराश कर सकती है इसीलिए सकारात्मक सोच की इस कला को सीखने पर ध्यान देने की जरूरत है। हमारे समाज में बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिन्हें इस बात का एहसास ही नहीं होता कि उन्हें अपनी भावनाओं को ढालने के लिए किस तरह की आजादी की जरूरत है। अगर हमें यह एहसास हो जाए कि हमारे विचार कितने शक्तिशाली हैं तो हम कभी भी नकारात्मक नहीं सोचेंगे। पत्रकारिता में भी खबरों में अच्छाई और बुराई के बीच एकमात्र अंतर हमारा दृष्टिकोण है। सकारात्मक सोच के साथ यदि कार्य किया जाए तो वह व्यक्ति की सोच को सकारात्मकता की ओर आकर्षित करती है।

मीडिया लगातार शासन के कार्य और नीतियों पर नजर रखता है, ताकि जवाब देही बनी रहे तथा उसके दायित्व के निर्वाह में गंभीरता बनी रहे। मीडिया रिपोर्ट के कारण सरकार के मनमाने अधिकारों के उपयोग पर अंकुश रखता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि सरकार के कार्यों में पारदर्शिता बनी रहे। सकारात्मक सोच के साथ पत्रकारिता परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है। मीडिया एक समग्र तंत्र है जिसमें प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, रेडियो, इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के माध्यम सम्मिलित हैं। मीडिया की समाज में शक्ति, महत्ता एवं उपयोगिता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभाव में काफी अभिवृद्धि हुई है लेकिन इसके साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आए हैं। मीडिया ने जहां जनता को निर्भीकता पूर्वक जागरूक करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने, सत्ता पर तार्किक नियंत्रण एवं जनहित कार्यों की अभिवृद्धि में योगदान दिया है वही लालच, भय, द्वेष दुर्भावना तथा राजनीतिक कुचक्रो के जाल में फंस कर अपनी भूमिका को भी कलंकित किया है।

व्यक्तिगत या संस्थागत अपने निजी स्वास्थ्य के लिए जर्नलिज्म को अपनाना, ब्लैकमेल कर दूसरों का शोषण करना, चटपटी खबरों को तवज्जो देना और खबरों को तोड़-मरोड़कर पेश करना, दंगे भड़काने वाली खबरें प्रकाशित करना, घटनाओ को दोहरे नजरिये से पेश करना, भय या लालच में राजनेताओं व अधिकारियों की चाटूकारिता करना, अपने निजी स्वार्थ को साधने के लिए अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और महिमा मंडल करना, वही किसी दूसरे की आलोचना करना जैसे अनेक अनुचित कार्य वर्तमान मीडिया द्वारा किए जा रहे हैं। मीडिया के इस प्रकार के व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और संतुलन की स्थिति पैदा हो रही है। ऐसे में सकारात्मक सोच के साथ पत्रकारिता को बढ़ावा देकर समाज में शांति व्यवस्था और संतुलन को स्थिर करना एवं अपनी विश्वसनीयता पर उठ रहे सभी संदेहों को दूर करना बेहद जरूरी है।

कश्मीर : कश्यप ऋषि, आतंकवाद, वर्तमान दौर

कमल कांत शर्मा
महानिरीक्षक, सेवानिवृत्ति

आज़ादी के समय कश्मीर में राजा हरि सिंह राज कर रहे थे, उन्होंने कुछ तो अपने सलाहकारों के बहकावे में आकर और कुछ नेहरू जी की शेख अब्दुल्ला के प्रति हमदर्दी देखकर कश्मीर को स्वतंत्र रखने का निर्णय लिया। लेकिन जब कबाईलियों के साथ मिलकर पाकिस्तानी फौज ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया तथा बारामूला से आगे आ गए तो राजा हरि सिंह ने भारत संघ में अपना विलय कर दिया किंतु नेहरू जी ने मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने का गलत निर्णय लेकर इस मामले को नासूर बना दिया जो आज तक परेशानी का कारण बना हुआ है

कश्मीर का नाम कश्यप ऋषि के नाम पर पड़ा, शुरुआत में कश्मीर में शैव मतालंबियों का गढ़ था तथा कालान्तर में वहाँ बौद्ध धर्म का भी प्रसार हुआ। कहा जाता है कि कश्मीर में शिक्षा का इतना प्रसार था कि वहां खेतों में काम करते समय महिलाएं आपस में संस्कृत में वार्तालाप करती थी। किंतु मध्यकाल में कश्मीर में इस्लाम धर्म ने अपने पैर पसार लिए और इसके लिए उन्ही सब हथकंडों का सहारा लिया गया जैसा कि शेष देश में। यह तर्क भी है कि फारुख अब्दुल्ला के दो पीढ़ी पहले के पूर्वज भी हिंदू थे।

राजा रणजीत सिंह ने कश्मीर में अपना राज्य कायम किया किंतु बाद में अमृतसर संधि के बाद डोगरा राजाओं ने अंग्रेजों से इसे 75 लाख रुपए में ले लिया और वहां डोगरा राज्य की स्थापना हुई।

आज़ादी के समय कश्मीर में राजा हरि सिंह राज कर रहे थे, उन्होंने कुछ तो अपने सलाहकारों के बहकावे में आकर और कुछ नेहरू जी की शेख अब्दुल्ला के प्रति हमदर्दी देखकर कश्मीर को स्वतंत्र रखने का निर्णय लिया। लेकिन जब कबाईलियों के साथ मिलकर पाकिस्तानी फौज ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया तथा बारामूला से आगे आ गए तो राजा हरि सिंह ने भारत संघ में अपना विलय कर दिया किंतु नेहरू जी ने मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने का गलत निर्णय लेकर इस मामले को नासूर बना दिया जो आज तक परेशानी का कारण बना हुआ है।

आजादी के बाद से ही कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियां एवं उपद्रव होते रहे हैं किन्तु सोवियत संघ (रूस) को अफगानिस्तान से निकालने के लिए अमेरिका ने पाकिस्तान के जरिये पाकिस्तानी और अफगानी गुटों को बड़ी मात्रा में हथियार और पैसा उपलब्ध कराया और उनमे धर्मान्धता पैदा की।

जब रूस अफगानिस्तान से वापिस चला गया तो पाकिस्तान ने आतंकवादियों को ट्रेनिंग और हथियार देकर उन्हें 1989 में कश्मीर भेजना शुरू कर दिया एवं बड़े पैमाने पर उपद्रव शुरू करवा दिए।

उस समय भारत में राजनितिक अस्थिरता थी अत: शुरुआत में सुरक्षा बल आतंकवादियों के खिलाफ समुचित एवं समग्र रूप से कार्यवाही नहीं कर पाए किन्तु समय के साथ सुरक्षाबलों ने आतंकवाद को कश्मीर में कुचल दिया किन्तु जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री सईद द्वारा चलाई गई 'हीलिंग टच' से आतंकवादियों के प्रति सहानुभूति ने इसे फिर उभार दिया। तबसे लगातार वहां आतंकवादी गतिविधियां चलती रही।

2019 में जब जम्मू कश्मीर को दो राज्यों में विभाजित किया और धारा 370 और 35(A) को समाप्त कर दिया तो आतंकवादियों एवं राज्य के आम नागरिकों पर इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा और राज्य में आतंकवादी गतिविधियों में बहुत कमी आई, किन्तु अभी भी आतंकवादी जब चाहे हिन्दुओ और सरकारी कर्मचारियों को अपना निशाना बना लेते है। जिससे यह साफ़ है कि उनका तंत्र अभी तक पूर्णतय सुरक्षित है।

अंशुमन यादव
Tv9 भारतवर्ष

दूरियां बढ़ाता, स्मार्टफोन!

अब चाहे कोई खुशी हो या कोई गम सिर्फ मोबाइल पर इमोजी भेज कर या मोबाइल पर सिर्फ मैसेज डालकर व्हाट्सएप चैट कर उसे अपने भावनाओं की इतिश्री कर दी जाती है। अब रिश्तेदार भी मोबाइल से वीडियो कॉल कर हाल-चाल ले लेते हैं। इतना ही नहीं किसी के घर में कोई कार्यक्रम है तो वीडियो कॉल कर उसे कार्यक्रम में दूर से ही शामिल हो लेते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि मोबाइल गलत है या मोबाइल के अलावा सोशल मीडिया के माध्यम वह गलत हैं मेरा कहना सिर्फ इतना है कि मोबाइल हो या सोशल मीडिया का कोई भी ऐसा माध्यम जिससे लोगों को लोगों से जोड़ा जाए वो हमारी और आपकी जिंदगी में पूरी तरीके से हावी ना हो। मोबाइल को अपनी जरूरत तो बनाएं लेकिन हद से ज्यादा मोबाइल पर निर्भर ना रहे मोबाइल अगर है तो अपने काम के लिए उसे इस्तेमाल करें ना कि उसे परिवार का एक सदस्य के तौर पर माना जाए।

मोबाइल फोन एक ऐसा यंत्र जिसने इंसान के जीवन में ही नहीं बल्कि दुनिया में या यूं कहे विश्व में अपनी एक अहम जगह बना ली है। यह मोबाइल काफी हद तक सहायक भी है और नुकसानदायक भी है। मोबाइल ने घरों में एक अलग जगह बनाई है घर के हर सदस्य के हाथ में मोबाइल रहता है जिसकी मदद से सब एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं। परिवार का कोई भी सदस्य कहीं भी दूर हो लेकिन एक मोबाइल ही है जो एक दूसरे से उसे तुरंत जोड़ सकता हैं। लेकिन एक दौर था जब घर में रहने वाले सभी सदस्य एक दूसरे से बातचीत किया करते थे, साथ बैठकर हंसी मजाक चलती थी, साथ बैठकर खाना खाया जाता था और साथ बैठकर हर सुख-दुख को बांटा करते थे और वह सुख-दुख आमने-सामने बैठकर ही बाटते थे।

एक दौर था जब तक घर का मुखिया घर नहीं आ जाता था तब तक घर का हर सदस्य जागता था और आपस में बातें करता था या सिर्फ टीवी देख कर अपना समय काटता था या किताब पढ़ कर समय काटता था। घर का मुखिया जब तक घर नहीं आ जाता था तब तक कोई खाना भी नहीं खाता था। इसके अलग अगर हम देखें तो घर का कोई सदस्य देर रात तक नहीं आता तो घर का मुखिया भी उसी तरीके से रात भर इंतजार करता था और परेशान रहता था जब तक घर का सदस्य घर में आ नहीं जाता था। तब तक घर का मुखिया भी जागता था ।

लेकिन अब यह सारी बातें एक पुराने किस्से हो चुके हैं एक पुरानी बातें हो चुकी हैं। एक दौर था जब मोहल्ले के सभी बच्चे रविवार के दिन छुट्टी पर इकट्ठे होते थे और एक साथ मैदान में जाकर क्रिकेट मैच, फुटबॉल या कोई और खेल खेला करते थे। सभी बच्चे घरों से नकलकर शारीरिक मेहनत किया करते थे। मोबाइल जब तक नहीं था तब तक बच्चे खो खो, दौड़ लूडो, सांप सीढ़ी, कैरम बोर्ड के अलावा अपने मनोरंजन के साधन से अपना मनोरंजन किया करते थे और अपना दिमाग और शरीर से ही दोनों ही इस्तमाल किया करते थे, बच्चे भी गपशप किया करते थे, वह भी अपने दोस्त के सुख-दुख में शरीख होते थे दूर रहने वाले रिश्तेदारों से टेलीफोन के जरिए कभी-कभी बातचीत हो जाती थी , उनके हाल-चाल ले लिए जाते थे और तो और उनसे मिलने साल या फिर 6 महीने में परिवार के सदस्य मिलने जाते थे या रिश्तेदार खुद घर आ जाते थे।

लेकिन दौर बदला आधुनिकता ने घर में प्रवेश किया और उस आधुनिकता ने पूरी जिंदगी ही बदल दी। अब ना ही कोई बच्चा घर से बाहर मैच खेलने जाने की जिद करता है , अब ना ही कोई बच्चा रविवार के दिन दोस्तों से मिलने जाता है और अब न ही कोई परिवार का सदस्य दूसरे रिश्तेदारों के साल 6 महीने में घर जाता है और ना ही अब कोई सदस्य साथ बैठकर खाना खाता है और ना ही कोई सदस्य आपस में बैठकर बात करते हैं क्योंकि अब सभी के हाथ में एक मोबाइल फोन आ गया। इस मोबाइल फोन ने घरों में दूरियां बड़ाई दूरियां बड़ाकर इंसान के जज्बातों को भी खत्म कर दिया। आज भलाई एक कमरे में परिवार के पांच सदस्य साथ बैठे हो लेकिन सभी के हाथों में मोबाइल होगा और सभी अपने मोबाइल पर ही व्यस्त दिखेंगे आपस में बातचीत पर कम ध्यान होगा।

सैन्य शक्ति में भारत का दबदबा

कैलाश चंद
जन प्रवाद

सैन्य शक्ति पर आधारित रिपोर्ट में भारत को 0.1023 स्कोर मिला है। वहीं अमेरिका को 0.0699, रूस को 0.0702 और चीन को 0.0706 स्कोर मिला है। इस रैंकिंग के अनुसार 0.0000 स्कोर को परफेक्ट माना जाता है। लिस्ट के लिहाज से भारत सैन्य तौर पर दुनिया का चौथा सबसे ताकतवर देश है। भारत ने सेना के आधुनिकीकरण का काम आजादी के बहुत देर बाद किया। पिछले 10 सालों में इस काम में तेजी आई है

पिछले एक दशक से भारत नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। अब ऐसा लगने लगा है कि वह दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया का सबसे सुपर पॉवर होगा। हाल ही में ग्लोबल फायर पावर ने वैश्विक रैंकिंग जारी कर इस संभावना को और प्रबल कर दिया है। रैंकिंग में भारत के फ्यूचर में काफी दम है।

दुनिया का चौथा ताकतवर देश बना भारत

गौरतलब है कि सैन्य शक्ति पर आधारित रिपोर्ट में भारत को 0.1023 स्कोर मिला है। वहीं अमेरिका को 0.0699, रूस को 0.0702 और चीन को 0.0706 स्कोर मिला है। इस रैंकिंग के अनुसार 0.0000 स्कोर को परफेक्ट माना जाता है। लिस्ट के लिहाज से भारत सैन्य तौर पर दुनिया का चौथा सबसे ताकतवर देश है। भारत ने सेना के आधुनिकीकरण का काम आजादी के बहुत देर बाद किया। पिछले 10 सालों में इस काम में तेजी आई है। वहीं अमेरिका, रूस और चीन पिछले 40 साल से इस पर काम कर रहे हैं। इतने कम समय में जब चौथा स्थान है तो आगामी दशक में कहां से कहां पहुंचेगा यह आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं।

भारत 145 देशों में शामिल

बता दें कि ग्लोबल फायरपावर की 2024 की इस लिस्ट में कुल 145 देशों को उनकी सैन्य ताकत के आधार पर शामिल किया गया है। भारत का पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान इस लिस्ट में नौंवे स्थान पर है। वहीं इटली को 10वां स्थान मिला है। दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन, जापान और तुर्किए भी शीर्ष 10 ताकतवर देशों में शामिल हैं। कई पैरामीटर को ध्यान में रखकर ग्लोबल फायरपावर ने यह लिस्ट तैयार की है, जिनमें सैनिकों की संख्या, सैन्य उपकरण, वित्तीय स्थायित्व, सैन्य संसाधन, प्राकृतिक संसाधन, उद्योग और भौगोलिक परिस्थितियों का भी ध्यान रखा गया है।

शीर्ष 20 में ये देश रहे शामिल

इस इंडेक्स में फ्रांस को 11वें स्थान पर रखा गया है। वहीं फ्रांस के बाद ब्राजील, इंडोनेशिया, ईरान, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया, इस्राइल, यूक्रेन, जर्मनी और स्पेन को शीर्ष 20 ताकतवर देशों में स्थान दिया गया है। भूटान के बाद मालदोवा, सूरीनाम, सोमालिया, बेनिन, लाइबेरिया, बेलिज, सिएरा लियोन कमजोर देश बताए गए हैं।

फ्यूचर प्लान बदल रहा स्थिति

फ्यूचर यानी आने वाले समय के अनुसार हथियारों में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर भारत ताकतवर बनता जा रहा है। भारतीय मिलिट्री इस समय भविष्य के लिए स्वदेशी हथियार बना रही है। ऐसे हथियार जिनके बारे में सोचकर चीन और पाकिस्तान अभी से खौफ में हैं।

अग्नि 6 मिसाइल

रिपोर्ट के अनुसार सबसे बड़ी चर्चा अग्नि-6 मिसाइल की हो रही है। पाकिस्तान के थिंक टैंक इस्लामाबाद पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट के लोग ये मान रहे हैं कि भारत इंटरकॉन्टीनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल बना रहा है।

जोरावर टैंक

लद्दाख में हल्के लेकिन बेहद फुर्तीले जोरावर टैंक को चलाकर देखा जा चुका है। अप्रैल तक इसके यूजर ट्रायल भी शुरू हो जाएंगे। इस टैंक का निशाना अचूक है। साथ ही हल्के होने के कारण इसे हेलीकाप्टर से ले जाकर कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

ब्रह्मोस-2 हाइपरसोनिक मिसाइल

रूस और भारत मिलकर ब्रह्मोस-2 हाइपरसोनिक मिसाइल बना रहे हैं। इसमें स्क्रैमजेट इंजन लगाया जाएगा। जो इसे शानदार गति और ग्लाइड करने की क्षमता देगा। इस मिसाइल की रेंज अधिकतम 600 किमी होगी। वहीं इसकी गति बहुत ज्यादा होगी।

हाइपरसोनिक ग्लाइड व्हीकल

हाइपरसोनिक ग्लाइड व्हीकल इतना खतरनाक होता है कि इसके बारे में कहा जाता है कि चाहे इससे बम गिराओ या विमान को बम बनाकर दुश्मन पर गिरा दो। भारत इस हाइपरसोनिक ग्लाइडर हथियार को बनाने में जुट गया है।

दुनिया का सबसे विकसित शहर होगा नोएडा

एयरपोर्ट और फिल्म सिटी से लगेंगे पंख

डॉ. अरुणवीर सिंह
सीईओ, यमुना प्राधिकरण

वह दिन दूर नहीं जब नोएडा भारत का सबसे विकसित और देश के आर्थिक शहर के रूप में शुमार होगा। उत्तर प्रदेश सरकार नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट और नोएडा फिल्म सिटी को लेकर बेहद गंभीर है। सरकार की गंभीरता पर यमुना प्राधिकरण के सीईओ अरुणवीर सिंह ने चार चांद लगाने का किया। यही वजह है कि वे विकास पुरुष के नाम से मशहूर हो गए हैं। नोएडा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से जल्द ही लोगों को आसमान की यात्रा करने का अवसर मिलेगा, वहीं फिल्म सिटी बनने के बाद यहां की पहचान दुनियाभर में कीर्ति स्थापित करेगी।

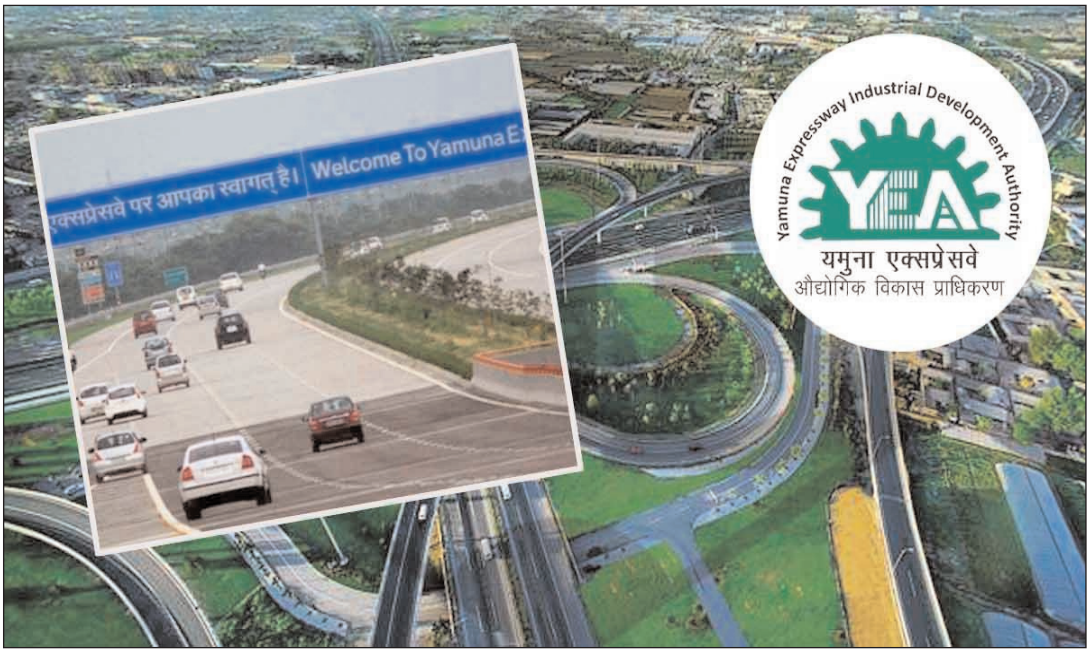

फिल्म सिटी का निर्माण जल्द

उत्तर प्रदेश का यमुना प्राधिकरण क्षेत्र इतिहास रचने वाला है। सीईओ अरुणवीर सिंह के प्रयास से सीएम योगी आदित्यनाथ के ड्रीम प्रोजेक्ट फिल्म सिटी को धरातल पर उतार दिया गया है। निर्माता-निर्देशक बोनी कपूर की बेबी ग्रुप और रियल एस्टेट कंपनी भूटानी ग्रुप मिलकर जेवर में फिल्म सिटी के निर्माण की तैयारियों में जुट गए हैं। दोनों ग्रुपों ने कई दिग्गजों को पछाड़ते हुए 30 दिसंबर यह टेंडर हासिल किया।

बता दें कि जेवर एयरपोर्ट के बगल में ही भारत की सबसे बड़ी फिल्म सिटी का प्रथम चरण 230 एकड़ भूमि पर बनना है। सबसे बड़ा बदलाव यह किया गया कि इसके लिए आवेदक कंपनियों को निशुल्क जमीन दी जा रही है। इस पर कंपनियों को अपना पैसा लगाकर इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करना है। इन्हीं शर्तों के आधार पर इस बार बड़ी-बड़ी कंपनियों ने फिल्म सिटी के ग्लोबल टेंडर में आवेदन करने में रुचि दिखाई थी। जिसमें प्रसिद्ध फिल्म निर्माता बोनी कपूर, केसी बोकाड़िया, जाने-माने फिल्मकार व टी-सीरीज कंपनी के मालिक भूषण कुमार, अक्षय कुमार, मैक्स और सोनी जैसी प्रसिद्ध कंपनियां शामिल थी।बता दें कि बोनी कपूर की बेबी कंपनी और भूटानी ग्रुप की ओर से 18 प्रतिशत की बोली लगातार विजयी बने। वहीं दूसरे नंबर पर केसी बोकाड़िया की कंपनी रही। इनकी ओर से कुल बचत का 15 प्रतिशत देने की बोली लगाई थी। वहीं अक्षय कुमार ने 10 प्रतिशत जबकि टी-सीरीज ने सवा पांच प्रतिशत की बोली लगाई थी।

दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा एयरपोर्ट

ग्रेटर नोएडा में बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को लेकर यमुना प्राधिकरण के सीईओ अरुणवीर सिंह ने बड़ी जानकारी दी। उन्होंने बताया किरनवे का काम पूरा हो चुका है। यह रनवे 3900 मीटर लंबा है। इसके अलावा एटीसी टावर एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया को सौंपने के बाद पीएम इसकी समीक्षा करेंगे। उन्होंने बताया कि एयरपोर्ट का काम करीब 60 प्रतिशत से अधिक हो गया है।

इस साल शुरू हो जाएगा नोएडा एयरपोर्ट

नोएडा एयरपोर्ट अगले साल शुरू हो जाएगा। इसको लेकर यमुना प्राधिकरण तेजी से कार्य कर कर रहा है। जब से अरुणवीर सिंह ने सीईओ की जिम्मेदारी संभाली है तबसे इस काम में तेजी आई है। इसके अलावा उन्होंने कई बड़े निर्णय भी लिए हैं। इस हवाई अड्डे के 2024 के अंत तक शुरू होने की उम्मीद है। नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से उड़ान शुरू करने वाली पहली एयरलाइन इंडिगो होगी। कंपनी 2024 के अंत तक अपनी उड़ान शुरू कर सकती है। नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे ने देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के अनुसार इंडिगो हवाईअड्डे से उड़ान भरने वाली पहली एयरलाइन होगी। दिल्ली में हस्ताक्षरित समझौते के अनुसार एनआईए और इंडिगो, उत्तर प्रदेश और उसके बाहर हवाई संपर्क मजबूत करने के लिए मिलकर काम करेंगे। बता दें कि यह हवाईअड्डा दिल्ली से लगभग 75 किलोमीटर दूर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गौतम बौद्ध नगर जिले के जेवर क्षेत्र में स्थित है।

दुनियाभर के उद्योगों को आकर्षित कर रहा एयरपोर्ट

यमुना अथॉरिटी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉक्टर अरुणवीर सिंह ने बताया कि जेवर में बन रहा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट देश और दुनिया भर के उद्योगों को आकर्षित कर रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा यमुना एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी के दायरे में विकसित किया जा रहा है। लिहाजा, यमुना अथॉरिटी इस मेगा प्रोजेक्ट का भरपूर फायदा उठाने में जुटी है। अब यमुना प्राधिकरण फॉर्च्यून-500 कंपनियों के लिए भूमि आवंटन योजना घोषित की है। इस स्कीम में फॉर्च्यून-500 कम्पनियां जमीन लेने के लिए आवेदन कर सकती हैं। बड़ी बात यह है कि उत्तर प्रदेश सरकार इन कंपनियों को 75 प्रतिशत सब्सिडी पर जमीन देगी। कुल मिलाकर यमुना प्राधिकरण के इतिहास की यह अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी औद्योगिक परियोजना है।

क्या है परियोजना

यमुना अथॉरिटी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉक्टर अरुणवीर सिंह ने बताया कि राज्य सरकार ने इस औद्योगिक भूखंड आवंटन योजना को मंजूरी दे दी है। प्राधिकरण का बोर्ड पहले ही मंजूरी दे चुका है। इस योजना के तहत वैश्विक और भारतीय फॉर्चून-500 कंपनियां जमीन लेने के लिए आवेदन कर सकती हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) हासिल करने वाली कंपनियां भी इस योजना में आवेदन करने के लिए योग्य रहेंगी। सीईओ ने बताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ राज्य में औद्योगिक विकास को रफ्तार देना चाहते हैं। सरकार का उद्देश्य जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे का बहु-आयामी उपयोग करना है। मुख्यमंत्री का मानना है कि जेवर एयरपोर्ट के पास न केवल देश बल्कि दुनिया की बड़ी औद्योगिक कंपनियां आएं। इसी को ध्यान में रखते हुए यह भूखंड आवंटन योजना घोषित की जा रही है।

75% मिलेगी सब्सिडी

डॉक्टर अरुणवीर सिंह ने बताया कि इन कंपनियों को अच्छा औद्योगिक माहौल और आकर्षक वित्तीय सहयोग देने के लिए राज्य सरकार ने ऐतिहासिक फैसला लिया है। जो फॉर्चून-500 कंपनियां यमुना प्राधिकरण से इस स्कीम के तहत भूखंड आवंटन हासिल करेंगी, उन्हें जमीन की कीमत में 75न्न सब्सिडी दी जाएगी। मतलब, जमीन की कीमत का केवल 25 फीसदी हिस्सा कम्पनी को चुकाना पड़ेगा। यह डायरेक्ट सब्सिडी होगी। इस योजना के तहत हम ज्यादा से ज्यादा फॉर्चून-500 कंपनियों को जेवर लाना चाहते हैं।

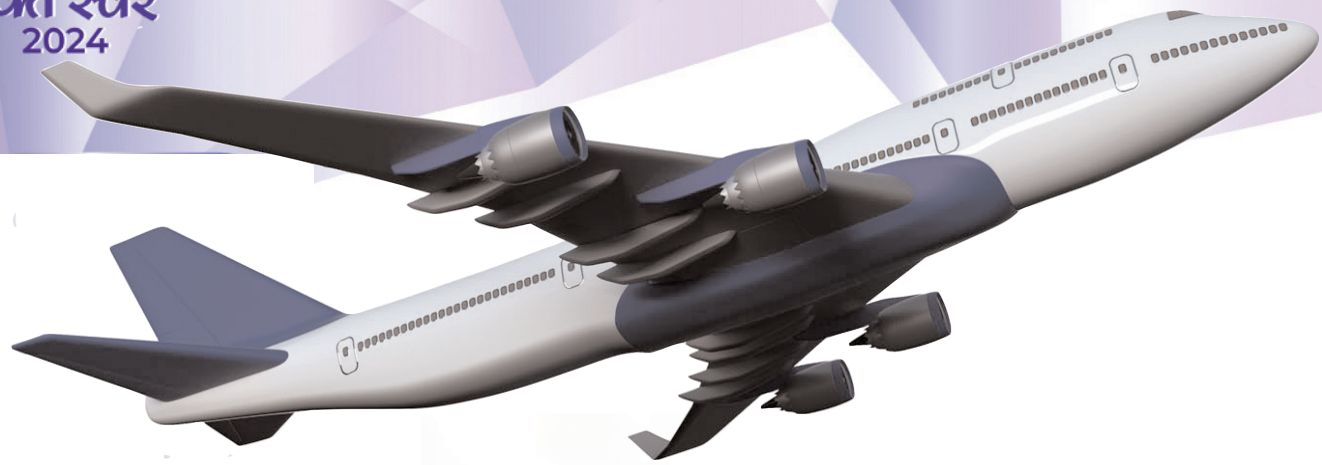

एयरपोर्ट पहुंचना होगा आसान

यमुना प्राधिकरण ने हवाई यात्रियों को एयरपोर्ट तक लाने और ले जाने की योजना पर भी काम शुरू कर दिया गया है। नोएडा एयरपोर्ट पहुंचने वाले यात्रियों के लिए बॉटेनिकल गार्डन से नोएडा एयरपोर्ट तक स्पेशल बसों का संचालन करने की तैयारी यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा शुरू कर दी गई है। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह के अनुसार, जेवर एयरपोर्ट तक यात्रियों और अन्य लोग आसानी से पहुंच सकें, इसके लिए कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के साथ साथ अन्य सेवाएं भी प्रदान की जाएंगी।

इन्हीं सेवाओं में यात्रियों के लिए स्पेशल बस सेवा का संचालन करना भी एक है। रैपिड रेल और पॉड टैक्सी का संचालन भी योजनाओं में शामिल है। बसों के संचालन के लिए डेडिकेटेड रूट बनाया जाएगा। यमुना प्राधिकरण ने जेवर एयरपोर्ट को रैपिड रेल से जोड़ने के लिए दिल्ली से नोएडा एयरपोर्ट और गाजियाबाद से नोएडा एयरपोर्ट की फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करा ली है, जिसे आगामी 18 दिसंबर को होने वाली बोर्ड बैठक में रखा जाएगा। फिलहाल, प्राधिकरण की प्राथमिकता एयरपोर्ट को दिल्ली न्यू अशोक नगर से जोड़ने की है। डेडिकेटिड रूट के लिए जल्द ही कंपनी का चयन कर स्टडी रिपोर्ट तैयार कराई जाएगी। डेडिकेटेड रूट पर दौड़ने वाली बसें कुछ चुनिंदा स्थानों पर ही रुकेंगी। रूट के निर्माण के लिए यमुना एक्सप्रेसवे और सर्विस रोड के बीच 250 मीटर चौड़ी जगह का उपयोग किया जा सकता है। शासन की ओर से रैपिड रेल के साथ-साथ बस सुविधाओं के संचालन को लेकर भी दिशा-

निर्देश दिए थे।

इन सेक्टरों को भी मिलेगा लाभ

बस सेवा का फायदा यमुना सिटी के आवासीय सेक्टरों को भी मिलेगा। अभी यमुना सिटी के सेक्टरों में पहुंचना आसान नहीं है। यमुना सिटी में औद्योगिक गतिविधियां शुरू होने और आवासीय सेक्टर-18 और 20 में बसावट होने पर परिवहन की व्यवस्था करनी होगी। डेडिकेटेड बस रूट को इस तरह तैयार किया जाएगा कि इससे एयरपोर्ट के साथ आवासीय सेक्टरों की कनेक्टिविटी बेहतर होगी।

10 एयर ब्रिज बनेंगे

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट तक पहुंचाना लोगों के लिए आसान होगा। इतना ही नहीं जेवर एयरपोर्ट के भीतर भी यात्रियों को कोई परेशानी नहीं होगी। दरअसल, एयरपोर्ट परिसर के भीतर 10 एयर ब्रिज बनाए जाएंगे। इसके बाद लोगों को सीधे हवाई जहाज पहुंचने तक किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसको लेकर जिम्मेदार कंपनी ने तैयारी शुरू कर दी है। उम्मीद जताई जा रही है कि जुलाई 2024 के आसपास नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से हवाई जहाज देश-विदेश के लिए उड़ने लगेंगे।

किसी भी मौसम में नहीं होगी परेशानी

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड के सीईओ डॉ.अरुणवीर सिंह ने बताया कि एयरपोर्ट शुरू होने के साथ ही परिसर में 10 एयर ब्रिज बन जाएंगे। इसके बाद यात्रियों को हवाईअड्डा परिसर में किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। आसानी से लोग विमान से सीधा टर्मिनल बिल्डिंग तक आवागमन कर सकेंगे। इससे समय की भी बचत होगी और लोगों को फायदा भी होगा। इसके अलावा किसी भी मौसम में समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

डॉ. निखिता नागर
डेंटल सर्जन, बिहेवियर थेरेपिस्ट

अपनी ज़िन्दगी से किसे प्यार नही ?

आत्महत्या, या अपने जीवन को लेना, तनावपूर्ण जीवन की स्थिति का एक दुखद परिणाम है। आज, विशेष रूप से किशोरों में आत्महत्या की घटनाएं ज्यादा आम हो रही हैं । मानसिक विकारों का इतिहास, शारीरिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार, बचपन की उपेक्षा, विफलता, परिवार के साथ संघर्ष या नशीली दवाओं और शराब की लत से आत्मघाती व्यवहार हो सकता है

अपनी जिंदगी से किसे प्यार नहीं है? चाहे हम रोजाना अपनी लाइफ को कोसते रहते हैं, विभिन्न परिस्थितियों पर खुद से ही सवाल करते हैं कि हमारे पास ऐसी जिंदगी क्यों है? लेकिन अंत में इस जिंदगी को जीने का जज्बा रखते हैं। इसे यूं ही अचानक खत्म करने का फैसला नहीं लेते। लेकिन फिर लोग आत्महत्या क्यों करते हैं? उनके जहन में आत्महत्या का ख्याल आता भी कैसे है? उन्हें क्यों ये एहसास होता है कि अब बस बहुत हो गया, और अब समय है खुद को खत्म करने का, दुनिया को अलविदा कहने का। हम आए दिन आत्महत्या के विभिन्न मामले खबरों के माध्यम से सुनते हैं। किसी ना किसी वजह के चलते लोग खुद को खत्म कर लेते हैं। जब हम आत्महत्या का कोई मामला सुनते हैं तो सच में हैरानी होती है, हम यह समझ नहीं पाते कि आत्महत्या करने का यह कारण क्या वाकई सही था? क्या यह कारण इतना बड़ा था कि कोई खुद की जान ही ले ले?

इस विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस जानते हैं के कैसे करें आत्महत्या की रोकथाम-

आत्महत्या, या अपने जीवन को लेना, तनावपूर्ण जीवन की स्थिति का एक दुखद परिणाम है। आज, विशेष रूप से किशोरों में आत्महत्या की घटनाएं ज्यादा आम हो रही हैं । मानसिक विकारों का इतिहास, शारीरिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार, बचपन की उपेक्षा, विफलता, परिवार के साथ संघर्ष या नशीली दवाओं और शराब की लत से आत्मघाती व्यवहार हो सकता है ।

आत्महत्या व्यवहार के चिह्न एवं लक्षण :

*आत्महत्या की बात करना या साधन प्राप्त करना जिसके माध्यम से कोई खुद को मार सकता है ।

*दैनिक गतिविधियों, स्कूल या काम में रुचि न होना ।

*किसी स्थिति के बारे में फंसा हुआ या निराश महसूस करना ।

*अत्यधिक शराब और नशीली दवाएं लेने जैसी गतिविधियों में संलिप्त होना

*मृत्यु, मरने और हिंसा से घिरा हुआ होना ।

*आत्मघाती प्रवृत्तियों वाले किसी की मदद कैसे करें-

*आत्महत्या प्रवृत्तियों को प्रतिबिंबित करने वाले किसी के बच्चों, पति या परिवार के सदस्यों से निपटने के दौरान, उनके बारे में उनसे बात करना आवश्यक है। आत्मघाती टिप्पणियों को बहुत गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

*आत्महत्या के व्यवहार को प्रदर्शित करने वाले किसी व्यक्ति से बात करते समय, किसी को सांत्वना देने और प्रोत्साहन के शब्दों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है । यह महत्वपूर्ण है कि आप उस व्यक्ति को यह न दिखाएं आप व्यथित हैं या भयभीत हैं, लेकिन आपको उसके प्रति अपनी चिंता व्यक्त करनी चाहिए । आत्मघाती व्यवहार का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति को अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए । जब उस व्यक्ति को सहायता मिल जाए और अब वह आत्महत्या की बात न सोच रहा हो, तो उसके माता-पिता या देखभाल करने वालों को उसे मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर, परामर्शदाता, मनोचिकित्सा थेरेपी वाले या मनोचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए ताकि वह अपनी आत्मघाती प्रवृत्तियों से उबर सके।

यह समझने के लिए व्यक्ति के साथ नियमित बातचीत करके यह जानना चाहिए कि वह अब कैसा महसूस कर रहा है और क्या वह फिर से उन्हीं प्रवृत्तियों को प्रदर्शित कर रहा हैं। वक्त की ज़रूरत है के हम अपने बच्चों को प्यार, परोपकार, और दूसरों के प्रति सद्भावना रखना सिखाएं और उनसे खुल के बात करें। खुश रहें, स्वस्थ रहें।

मीडिया क्रांति : एआई के साथ पत्रकारिता का भविष्य

नितिन कुमार शर्मा
सिटीवेब एवं सच कहूँ

यह सत्य है कि एआई का उपयोग पत्रकारिता को नए और विविध आयामों में ले जा सकता है, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियों का सामना भी करना होगा। जैसे डेटा सुरक्षा और गोपनीयता, सोशल जिम्मेदारी, बायस्ड रिपोर्टिंग, स्वतंत्रता और नैतिक मुद्दे 7 एक ओर, जहां यह तेजी से और सटीकता से खबरें तैयार कर सकता है, वहीं दूसरी ओर यह शक्तिशाली मीडिया हो सकता है जो भी हो, एक नए दौर की शुरुआत हो चुकी है, जिसमें तकनीकी उन्नति और पत्रकारिता का संगम हमें नए और रोचक दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

दुनिया भर के विभिन्न मीडिया संस्थानों और समाचार एजेंसियों में आजकल कंप्यूटर का एक नया और अहम उपयोग हो रहा है। खेल, मौसम, चुनाव, स्टॉक एक्सचेंज जैसे विषयों पर खबरें बनाने में अब कंप्यूटर सक्रिय रूप से शामिल हो रहे हैं। इस समय की सबसे बड़ी रुचि वाली बात यह है कि कंप्यूटर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की सहायता से पत्रकारों की तुलना में ज्यादा सटीक और विश्लेषणात्मक खबरें प्रदान कर रहे हैं।

उदाहरण के तौर पर, AI द्वारा तैयार दुनिया का पहला समाचार चैनल NewsGPT मशीन लर्निंग एल्गोरिदम और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण तकनीक द्वारा संचालित है जो वास्तविक समय में दुनिया भर में प्रासंगिक समाचार स्रोतों को स्कैन करके ऐसी खबरें प्रदान करता है जो सटीक, अद्यतित और निष्पक्ष होती हैं। जिसका कंटेंट पूरी तरह से AI द्वारा तैयार किया जाता है। इस बदलते माध्यम के साथ, कुछ पत्रकार अब यह सोच रहे हैं कि क्या यह एआई पत्रकारों की नौकरी को भी प्रभावित करेगा? या क्या इससे पत्रकारिता को नए आयाम मिल सकते हैं?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किस तरह पत्रकारों की मदद कर सकता है?

1. सुधारित उत्पादकता

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से पत्रकारों की उत्पादकता को काफी बढ़ाया जा सकता है। एक एल्गोरिदमिक दृष्टिकोण से डेटा से कहानियां तैयार करना और उन्हें रिपोर्टिंग के लिए उपयोग करना, पत्रकारों को बहुत ज्यादा समय बचा सकता है। यह उन्हें नए और अधिक महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना प्रदान करता है।

2. ब्रेकिंग न्यूज का ट्रैकिंग
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से ब्रेकिंग न्यूज़ को ट्रैक करना भी संभव है। इससे पत्रकार विशेषज्ञ विषयों पर त्वरित रूप से नए और रुचिकर खबरों को प्रस्तुत कर सकते हैं।

3. समाचारों का एकत्र और व्यवस्थित करना
टैग और लिंक का उपयोग करके समाचारों को एकत्र और व्यवस्थित करना भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा किया जा सकता है। यह पाठकों को संग्रहित और सुझावित सामग्री में सहायता कर सकता है।

4. वॉयस ट्रांसक्रिप्शन का उपयोग
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक से स्वचालित वॉयस ट्रांसक्रिप्शन का उपयोग करके बातचीतों और इंटरव्यूज को टेक्स्ट में बदलना संभव है। इससे लेखनिकी विचारशीलता में भी सुधार हो सकता है और बड़े संख्यात्मक साक्षरता वर्ग के पाठकों / दर्शक के लिए सुगमता पैदा की जा सकती है। जैसे एक निजी न्यूज़ चैनल की एंकर सना 24 भाषाओं में न्यूज़ प्रेजेंट कर सकती है

5. सोशल मीडिया मॉनिटरिंग
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सोशल मीडिया पर चल रहे समाचारों को मॉनिटर करने में भी सहायक हो सकता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को त्वरित और विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हो सकती है।

6. फैक्ट चेकिंग
एआई तथ्य-जांच (Fact-checking) की मदद से खबरों की सत्यता की जाँच करने में तेजी हो सकती है। यह समय को बचाकर पत्रकारों को अधिक विशेषज्ञता प्रदान कर सकता है।

यह सत्य है कि एआई का उपयोग पत्रकारिता को नए और विविध आयामों में ले जा सकता है, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियों का सामना भी करना होगा। जैसे डेटा सुरक्षा और गोपनीयता, सोशल जिम्मेदारी, बायस्ड रिपोर्टिंग, स्वतंत्रता और नैतिक मुद्दे। एक ओर, जहां यह तेजी से और सटीकता से खबरें तैयार कर सकता है, वहीं दूसरी ओर यह शक्तिशाली मीडिया हो सकता है जो भी हो, एक नए दौर की शुरुआत हो चुकी है, जिसमें तकनीकी उन्नति और पत्रकारिता का संगम हमें नए और रोचक दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

ब्रजेश तिवारी
एबीपी न्यूज

'पत्रकारिता और पाठक'

सोशल मीडिया के बढ़ते स्वरूप को लेकर हमेशा यह चर्चा होती रही है कि आने वाले वक्त में टेलीविजन और अखबार की पत्रकारिता खत्म हो जाएगी। लेकिन आज भी जब कोई बड़ी खबर होती है तो पाठक सीधे न्यूज़ चैनल ही देखना पसंद करता है या फिर अखबार पर उसे ज्यादा भरोसा होता है। अब इस तरह की पत्रकिरिता को क्या कहते हैं या क्या कहेंगे ये कह पाना तो बहुत ही मुशकिल हैं। इतना तो तय हैं कि ज्यादातर पत्रकारिता इसके मुल्यों को ताक पर रखकर आज की पत्रकारिता की जा रही है। जिसके लिए सोशल मीडिया पर फैलाई जाने वाली भ्रामक खबरें ज्यादा जिम्मेदार है। ऐसे में पाठकों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह खबर पर अपनी राय बनाने से पहले यह जरूर तय कर ले कि उन तक पहुंचाई गई खबर का स्त्रोत क्या है।

पत्रकारिता अपने आप में एक विशाल क्षेत्र है। इसे किसी एक पंक्ति में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। हम सरल शब्दों में समझें तो आम से खास तक संसार में हो रही घटनाओं की सटीक जानकारी पहुंचाना ही पत्रकारिता है। ये ब्योरा किसी भी क्षेत्र से हो सकता है। बढ़ते हुए समय के साथ हमने पत्रकारिता में नए आयाम ढूढ़ लिए हैं। इसके साथ ही आज की पत्रकारिता और एक दसक पहले की पत्रकारिता में काफी फर्क आ गया है। पहले माना जाता था कि किसी भी लेख के लिए 5डब्ल्यू और 1 एच बिल्कुल जरूरी है। ताकी पूरी खबर यानी सटीक ख़बर पढ़ने, देखने या सुनने वालों तक पहुंचे। हेडलाइन बहुत ही सोच-समझकर दी जाती थी। ताकी उसे पढ़कर ये समझ में आ जाए की लेख का विषय क्या है । आज इन मूल्यों की चिंता किसी को भी नहीं है। सब बस ये चाहते हैं कि मेरी खबर पढ़ ली जाए। चाहें उसके लिए किसी भी तरह की कैची हेडलाइन क्यों ना देनी पड़े। कई बार तो मैं देखता हूं कि उस हेडलाइन से कहानी का कोइ संबंध ही नहीं होता। हेडलाइन होती है, रणबीर ने मारी आलिया को थप्पड़। अब आलिया और रणवीर के फैन तो इस ख़बर को देखेंगे ही। पांच मिनट की पूरी वीडिओ देखने के बाद पता चलता है कि थप्पड़ जैसा तो कुछ है ही नहीं। मतलब आप अपने दर्शक को बेवकूफ बना रहे हैं। मेरी समझ से इसे पत्रकारिता तो नहीं कहते हैं। ऐसी हेडलाइन जिस में लिखा हो, क्या होता अगर ये न हुआ होता? मैं खुद उस लेख को खोलकर भी नहीं देखता। मैं जानता हूं ये भ्रमित करने के लिय ही है। इसमें कुछ भी जानने लायक नहीं होगा। मुझे विश्वास हैं कि सिर्फ मैं ही नहीं मुझ जैसे बहुत से लोग होंगे जो यही करते होंगे।

व्लॉग चलाने वाले को छोड़ दीजिए कई बड़े अखबारों में भी कहानी लिखने का फॉर्मुला, 5डब्ल्यू और 1एच में से किसी का कोई अता-पता नहीं होता। कई बार लेख में जगह का नाम तक नहीं दिया होता है। ऐसे उलझी हुई कहानी छाप देते हैं जिसे अगर जानना है तो खुद की बुद्धी पर विश्वास करना होगा। कई बार तो गलत जानकारियां भी बेबाक दे दी जाती हैं। ऐसे में और कुछ भी नहीं हो रहा सिर्फ आप अपने पाठक या दर्शक का विश्वास अपने उपर से उठा रहे होते हैं। उनका विश्वास आप पर से खत्म होते ही आपकी इज्जत भी उनकी नज़र में ख़त्म हो जाती है। जो कि एक सच्चे पत्रकार के लिए मौत के बराबर है। कई बार बड़े ख़बरिया चैनलों पर टीज़र चला रहे होते हैं, भारत से डरा चीन, चीन के हौसले पस्त, भारत के सामने चीन ने टेका घुटना। सच्चाई ये होती है की भारत ने नई मिसाइलें खरीदी होती हैं। वो मिसाइलें जो चीन के पास पहले से होती हैं। क्या जरूरत है इस अतिश्योक्ति की? इसे देशभक्ति तो कतई नहीं कहा जा सकता। क्या ख़बरिया चैनल पर बैठे पत्रकार ये नहीं जानते कि सब-कुछ मॉनिटर होता है ? फिर दो देशों की बीत वैमन्स्य क्यों बढ़ाना। ये पत्रकारिता तो नहीं है।

कहानी की फोटो किसी भी कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हौती है। ये जरूरी है कि लेख के साथ लगी फोटो उसे जूड़ी हुई ही हो। आज कई जगहों पर भ्रमित करने वाली फोटो भी लगा दी जाती हैं। जैसे कहानी किसी जानवर की हो जिसका नाम कटरिना है, तो फिल्म नाइका कटरिना भी फोटो लगा देते हैं। ये बहुत ही ओछी हरकत है। हालांकि इसके लिए सोशल मीडिया कुछ ज्यादा ही जिम्मेदार है। जिस तरीके से सोशल मीडिया पाठकों के बीच अपनी पाठ बना रहा है खास करके रोचक खबरों की वजह से यह भी एक बड़ी चिंता का विषय है।

Kailash Hospital & Heart Institute

(A Unit of Kailash Healthcare Ltd.)

H-33, Sector- 27, Noida, 201301 Phone: +(91)-(120)-2444444 / 2445566 Fax: 2552323
E-mail: kailash.noida@kailashhealthcare.com Website: www.kailashhealthcare.com

We accept High Risk Patients

325 Beds
Super Speciality Hospital

NABH ACCREDITATION
Highest National Recognition For Hospitals

NABL ACCREDITATION
Highest National Recognition For Laboratory Services

Specialties

- Cardiology
- Cardio-thoracic Surgery
- Intensive Care
- Internal Medicine
- Pulmonology / Bronchoscopy
- Gastroenterology / G.I. Surgery
- Arthroscopy
- Joint Replacement Surgery
- Neurosurgery / Neurology
- Minimal Access Surgery (Laparoscopy)
- Neonatology / Paediatric Surgery
- Bone Densitometry - Dexa Scan
- Mammography
- MRI / CT Scan / CT Angiography / Color Doppler
- Interventional Radiology
- Plastic / Cosmetic Surgery
- Eye
- ENT
- Dermatology
- Diabetes & Hormonal Endocrinology
- Oncology/ Onco Surgery
- Nephrology
- Urology
- Obstetrics & Gynaecology
- Advance Gynae Endoscopic Center
- Advance Fetal Medicine Unit
- Dental / MaxilloFacial Surgery

GROUP HOSPITALS

- Kailash Hospital & Heart Institute(Noida)
- Kailash Hospital & Neuro Institute (Sec.-71, Noida)
- Kailash Hospitals ltd. (Gr. Noida)
- Kailash Hospital (Jewar)
- Kailash Hospital (Khurja)
- Kailash Hospital (Dehradun)
- Kailash Institute of Naturopathy Ayurveda & Yoga (Gr. Noida)
- Kailash Health Village (Sector-62 Noida)
- Kailash Deepak Hospital (East Delhi)

24 X 7 SERVICES

- EMERGENCY
- BLOOD BANK
- CHEMIST SHOP
- LABORATORY SERVICES
- AMBULANCE

FOLLOW US ON : | DOWNLOAD KAILASH HEALTHCARE APP

GET IT ON Google Play
Available on the App Store

एक सिक्के के दो पहलू..
विकास और विनाश

जेपी शर्मा
अमर उजाला

गौतमबुद्ध नगर बसाने के पीछे सोच बहुत ऊंची थी। लेकिन जब जिला बस रहा था तो कुछ छोटी सोच वालों ने गहरे जख्म दे दिए। स्वार्थ सिद्धि से जुड़े इन गहरे जख्मों का दर्द हमें साल रहा और आने वाली पीढ़ी को कराहने पर मजबूर करेगा। वर्तमान में जल संक्रमण और प्रदूषण से होने वाली गंभीर बीमारियां हम झेल रहे हैं। हम नहीं जागे तो भविष्य में दुष्परिणाम इससे भी बदतर होंगे। कुछ लोग कहते हैं कि महाभारत में महर्षि द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, दानवीर कर्ण भीष्म पितामह का क्या कसूर था। उन्हें बताना चाहूंगा कि जब अन्याय हो रहा था तो वह आंख मूंद कर बैठे थे। मौन धारण करने वाला भी अन्याय का भागीदार होता है।

उम्र अर्धशतक की ओर बढ़ रही है। बदलाव के नजरिये से देखूं तो मैं अपने साथ (80 -90 के दशक) की पीढ़ी को सौभाग्यशाली समझता हूं। इस पीढ़ी ने जो बदलाव देखे हैं, वह इससे पहले शायद ही किसी पीढ़ी ने देखे होंगे या आने वाली पीढ़ी देखेगी। सूचना क्रांति और विकास से जुड़े बदलाव हृदय को सुखद अनुभूति देते हैं। लेकिन विकास का दूसरा पहलू यानी विनाश चिंतन और मंथन के लिए विवश करता है। विनाश विकास का दूसरा पहलू कैसे है मुझे लगता है यह विस्तृत रूप से बताने की जरूरत नहीं है। लेकिन थोड़ा सा प्रकाश डालना जरूरी है। जब अफसर, नेता और अन्य जिम्मेदार आमजन के हित में कार्य करने के बजाय अपना विकास करने लगते हैं।

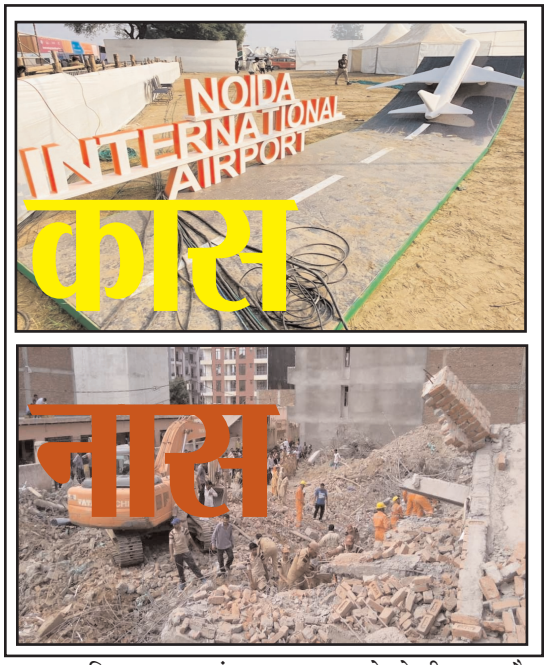

मीडिया कर्मी आंख मूंद लेते हैं या फिर वह भी अपने विकास के प्रयास में जुट जाते हैं। यह ऐसी ही परिस्थितियां हैं जो विकास को विनाश की ओर ले जाती हैं। केदारनाथ, उत्तराखंड उत्तरकाशी की सिलक्यारा सुरंग और जिले के शाहबेरी में हुई दुर्घटनाएं इसका जीता जागता उदाहरण हैं। कोरोना महामारी भी इससे अलग नहीं है। कोरोना काल ने हमें सबक दिया की प्रकृति क्या चाहती है और एक मानव जीवन के लिए सबसे ज्यादा क्या जरूरी है। हम ट्विन टावर ध्वस्तीकरण को भी इसी नजरिए से देख सकते हैं। अगर पिछले एक-दो साल को छोड़ दूं, तो इससे पहले लंबे अंतराल के बाद भूकंप आते थे। आज माता-पिता इस दुनिया में नहीं है लेकिन जब भी भूकंप आता है मुझे याद आता है कि मैं अपनी मां से कहता था कि कैसा भूकंप आया, पता ही नहीं चला। जवाब मिलता था भूकंप का पता न चले तो ही अच्छा है। लेकिन आप एक दो साल से भूकंप की श्रृंखला अक्सर महसूस होने लगी है। जिले में कैंसर पीड़ितों की घटनाएं आश्चर्य चकित ढंग से बढ़ रही हैं। दावा किया जा रहा है कि है जल संक्रमण के कारण हो रहा है। यहां के पानी में विषैले तत्व बढ़ रहे हैं। हृदय गति रुकने की घटनाएं तेजी से बढ़ रही है। कई युवाओं को भी इसे जान गंवानी पड़ी है। प्रकृति अपना संतुलन स्वयं बना लेती है। यह संतुलन विकास और विनाश के बीच की कड़ी है। यह संयोग है कि मेरी जन्मभूमि (खुर्जा बुलंदशहर) से ही कर्म भूमि गौतमबुध नगर यानी नोएडा-ग्रेटर नोएडा का जन्म हुआ है। न केवल गौतमबुध नगर कभी बुलंदशहर जिले का हिस्सा था बल्कि खुर्जा लोकसभा क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। इसलिए मैं इस क्षेत्र से हृदय से जुड़ा हूं। न केवल इस क्षेत्र बल्कि इस क्षेत्र की आने वाली पीढ़ी की भी मुझे फिक्र है। क्योंकि इस क्षेत्र में अब देश के विभिन्न राज्य और विदेशी नागरिक भी बड़ी संख्या में रहने लगे हैं।

यहां की विश्व स्तरीय कंपनियां और शिक्षण संस्थान लोगों को लुभा रहे हैं। गौतमबुद्ध नगर बसाने के पीछे सोच बहुत ऊंची थी। लेकिन जब जिला बस रहा था तो कुछ छोटी सोच वालों ने गहरे जख्म दे दिए। स्वार्थ सिद्धि से जुड़े इन गहरे जख्मों का दर्द हमें और हमारी आने वाली पीढ़ी को कराहने पर मजबूर करेगा। जिले में ही तैनात एक पुलिस अधिकारी से चंडीगढ़ और ग्रेटर नोएडा की तुलना को लेकर बात चल रही थी सामने आया कि चंडीगढ़ के हर सेक्टर में सरकारी अस्पताल और स्कूल की व्यवस्था है इसके अलावा सभी सुविधाएं उसी सेक्टर में मौजूद है इसके चलते सेक्टर के लोगों को पढ़ाई इलाज और जरूरत के सामान खरीदने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता इसका सीधा असर वहां की यातायात व्यवस्था पर पड़ता है।

गौतम बुद्ध नगर में एक सेक्टर सोसाइटी मैं रहने वाले बच्चों को बस और स्कूल वैन से दूर-दूर जाना आना पड़ता है। इससे यातायात व्यवस्था भी बिगड़ती है और बच्चों को भी अपना कीमती समय स्कूल आने-जाने में भी करना पड़ता है। यही हाल स्वास्थ्य सेवाओं और जरूरतमंद सामानों की खरीदारी करने वाले लोगों का भी है। गौतम बुद्ध नगर के सेक्टर में स्कूल और अस्पताल तो बनाए गए हैं लेकिन व्यवसायीकरण के लिए। यह सभी अस्पताल प्राइवेट है और इनमें इलाज कराने पर निवासी को अपनी जेब ढीली करनी पड़ती है। यहां बनाए गए स्कूल भी प्राइवेट है। उनकी फीस भी देश के अधिकांश शहरों से काफी अधिक है। यहां एक आम आदमी निजी कंपनी में काम कर किराए पर रहकर बच्चों को बढ़ाना किसी संघर्ष से काम नहीं है। जिले में प्राइवेट सेक्टर में काम करने वाले कर्मचारियों और प्रवासियों की संख्या काफी बढ़ चुकी है। जब गौतम बुध नगर बसाने की प्लानिंग की गई होगी तो इन कर्मचारियों और प्रवासियों के रहने बचने की भी योजना बनाई गई होगी। लेकिन जिम्मेदारों ने अपना विकास करने के कारण इस योजना की बली चढ़ा दी।

इसका लाभ आज भू माफिया उठा रहे हैं इन्होंने डूब क्षेत्र को बेचकर यहां बड़ी आबादी बसा दी है। ऐसे ही करते हैं यहां न केवलप्रदूषण और संक्रमण का कारण बन रहे हैं बल्कि आपदा को नेता दे रहे हैं। वर्तमान में जल संक्रमण और प्रदूषण से होने वाली गंभीर बीमारियां हम झेल रहे हैं। हम नहीं जागे तो भविष्य में दुष्परिणाम इससे भी बदतर होंगे। कुछ लोग कहते हैं कि महाभारत में महर्षि द्रोणाचार्य, दानवीर कर्ण और भीष्म पितामह का क्या कसूर था। उन्हें बताना चाहूंगा कि जब अन्याय हो रहा था तो वह आंख मूंद कर बैठे थे। मौन धारण करने वाला भी अन्याय का भागीदार होता है। गौतम बुद्ध नगर में यमुना और हिंडन नदी बहती है और काफी बड़ा डूब क्षेत्र है। लेकिन इस डूब क्षेत्र को लगभग बर्बाद कर दिया गया है। अफसर, नेता और सफेदपोषों का गठजोड़ इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। अपनी और अपने हम पेशेवरों की भागीदारी और गैर जिम्मेदारी से मैं इनकार नहीं करता। केवल इतना ही कहना चाहूंगा की अभी भी वक्त है, जिम्मेदार विभाग के अधिकारी और हम मिलकर संयुक्त प्रयास करें तो भविष्य में आने वाली आपदा और बीमारियों को रोका जा सकता है। एनजीटी लगातार डूब क्षेत्र से अवैध अतिक्रमण हटाने का आदेश कर रही है लेकिन जिम्मेदार विभाग और अफसर टाल मटोल कर रहे हैं। शहर में जब-जब विकास हुआ है तब तक व्यापारीकरण के कारण कुछ अफसर और नेता अपने लाभ के हिसाब से काम करते रहे हैं। वे केवल गोल्डन लोकेशन देखते हैं और यह लोकेशन कई बार ग्रीन बेल्ट होती है। इन ग्रीन बेल्ट पर आज बड़ी-बड़ी अट्टालिका खड़ी हो गई हैं। उधर जेवर में नोएडा एयरपोर्ट का निर्माण चल रहा है। वहीं इसके आसपास फिल्म सिटी समेत के बड़ी परियोजनाएं मूर्त रूप धारण कर रही हैं। हमें देखना होगा कहानी वहां भी तो निज लाभ के लिए मुनाफाखोरी और भ्रष्टाचार का खेल तो नहीं खेला जा रहा।

कहीं वहां भी तो अफसर, नेता और सफेदपोश प्रॉपर्टी डीलिंग और निवेश की आड़ में कोई ऐसा कार्य तो नहीं कर रहे, जो हमारी आने वाली पीढ़ी, पशु, पक्षी, नदी और पर्यावरण के लिए भविष्य में घातक साबित हो। हद तो तब जाती है, जब जिले में सक्रिय यह गठजोड़ न केवल माफिया का मददगार बनता है बल्कि काले कारोबार में सहभागिता दिखाने लगता है। यह गठजोड़ अपना विकास करने के लिए विनाश का रास्ता प्रशस्त कर रहा है। यह गठजोड़ अपने पेशे और इससे जुड़े लोगों की समझ में छवि खराब कर रहा है। इस गठजोड़ को पहचान कर इससे सावधान रहने की जरूरत है। अफसर, नेता और पत्रकारों को समाज और आमजन के हित सर्वोपरि रखना होगा। हमें याद रखना होगा ग्रेटर नोएडा वेस्ट के शाहबेरी में ऐसी ही करतूतों से 17 जुलाई 2018 को हुआ हादसा प्रकृति की केवल एक चेतावनी था। 28 जुलाई 2022 सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर ट्विन टावर को गिराया गया। यह ट्विन टावर भी इसी मुनाफाखोरी और भ्रष्टाचार की सोच का नतीजा थी।

जिले में पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं में सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने की कोशिश के मामले भी सामने आए हैं। जिसमें दो जाति के लोगों के बीच द्वेष भावना पैदा करने की कोशिश की गई। गहनता से मंथन करें तो इन सब के पीछे कुछ चंद लोगों का हाथ था। हमें (अफसर, नेता, समाजसेवी और पत्रकारों) ऐसे राजनीतिक षडयंत्रों से भी सावधान देना होगा और जिले के लोगों को भी जागरूक करना होगा।

भारत की मिट्टी में समावेश?

डॉ आरती शर्मा
निदेशक, प्रज्ञा आईएएस एकेडमी

कर्म ज्ञान से अज्ञात मानव कोई महामानव नहीं केवल मज्ञानी ही हो सकता है। इर्यो म सच्चा अर्थ सिर्फ उनको करने भाव में नहीं. अपितु उन्हे परमार्थ सार्थक रूप के वशीभूत किया. गया पर हित में किया गया स्वार्णरहित कार्य पूर्णता की ओर ले जाता है। उसके का चयन ही उसकी उन्हण्टता का परिचायक है

बात करूँ क्या इस मिट्टी की जिसने तुझे बनाया है, क्या इस मिट्टी से मैंने ना हुछ भी पाया है, चलती मैं तो सिर झुकाकर तु चलता सीना तानकर बात करूँ मैं आँख मुकामर 'तु धुरे मुझे अपनी जागीर खानकर पीर उठती है सीने में तेरी गुलामी सहने से आजाद भारत में भी आजादी से ना जीने में हर मन्दिर का द्वार है तु फिर देवी का भबक क्यूँ है? हर मजिस्द का मौलवी है तु फिर मानवता का हारण क्यूँ है? रोक लगायी सबरी में तुने, मम्मा मुझसे छीना है. तेरे इन आधातों से ही छलनी मेरा सीना है बात करूं क्या उस मिटटी की जिसने तुझे बनामा है क्या इस मिटटी से मैंने ना कुछ भी पाया है।

माँ को त माना समसे रिश्तो को गरिमा को तुने यूं जान तु अब, पहचान तु. को ना बेरी माना है –ना अब तक पहचाना है अब तुझको अब मे ता है समझाना बहुत हुआ बस पिल्सला इन्साफ मुझे अब पाना है. चलना चाहूं खाली रस्तो मर बेखौफ मुझे अब जीना है बन्धन तोलुकर तेरे अब मुझे भी तनकर चलना है बहत खीचे कदम पीछे अब आगे इन्हें उठाना है अस्तित्व तेरा ही है मुझसे अब तुझे ये समझाना है इस मिट्टी से तुझे मुझे एक ही समय तो बनाया है जो अधिकार मिला तुझे है तो मैने म्यूँ ना अब तक पाया है, समल जरा जिस मिटटी ए पितृसत्ता अब मुझे भी समझ में आया है ने तुझे बनाया मैने भी उससे ही अस्तित्व पाया है बात करू क्या उस मिट्टी की जिसने तुझे बताया है तुने ही नहीं इस मिटटी से मैने भी जीवन पाया है तुने ही नहीं इस मिट्टी से मैने भी जीवन पाया है। थकान कभी भी काम के गरण नहीं होती बहि 1, भय और असंतोष के गरण होती है।, चिता, निराशा, और किसी भी कार्य की सम्पूर्णती इस बात पर करती है कि या धमानपूर्ण वह कार्य कितना उत्साहपूर्ण थो

जीवन में आपके द्वारा किये गये सार्थक व अर्थपूर्ण कार्य आपको उगे की तरफ अग्रसित करते है आपको कामयाबी की तरफ ले जाते है और आपकी कामयार्थ के बाद ही लोगो से आप में सुठियाँ दिखती है जो शायद आप थी ही नहीं। मै कभी आप के उत्साहपूर्ण, गर्व हरने एम की सराहना आपको की प्रेरणा देता है आप अपने कार्य को निर्भय भयमुक चिन्तारहित होकर पूरा करने कार्य आपको सुन्तोष देता है। और जो कार्य सापको सन्तोष दे वह जीवनदायक होता है जिससे आप कभी यमन महसूस ही नहीं करते और. हमेशा उत्साहपूर्ण अपने कार्य में सलंग्न रहते हैं। कर्म ज्ञान से अज्ञात मानव कोई महामानव नहीं केवल मज्ञानी ही हो सकता है। इर्यो म सच्चा अर्थ सिर्फ उनको करने भाव में नहीं. अपितु उन्हे परमार्थ सार्थक रूप के वशीभूत किया. गया पर हित में किया गया स्वार्णरहित कार्य पूर्णता की ओर ले जाता है। उसके का चयन ही उसकी उन्हण्टता का परिचायक है।

संकल्प पर निर्भर होती है कार्य की सफलता

प्रणव भारद्वाज
ग्राउंड जीरो न्यूज़

**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
कहे कबीर हरि पाइए मन ही की परतीत।।**

कबीर का यह दोहा इस चित्रण में अति सहायक है की चिंता, निराशा,भय और असंतोष किसी भी कार्य को पूर्णता के स्तर पर ले जाने से रोकते हैं। कोई भी कार्य यदि पूर्ण उत्साह के साथ संपन्न किया जाता है और उसमें मानसिक दशा पूर्ण उत्साही होती है तो वह कार्य पूर्ण रूप से सफल होता है।

थकान कभी भी काम के कारण नहीं होती बल्कि चिंता, निराशा, भय और असंतोष के कारण होती है, किसी भी कार्य की संपूर्णता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह कार्य कितना उत्साहपूर्ण था या थकानपूर्ण
जीवन में आपके द्वारा किए गए सार्थक व अर्थपूर्ण कार्य आपको आगे की तरफ अग्रसित करते हैं आपको कामयाबी की तरफ ले जाते हैं और आपकी कामयाबी के बाद ही लोगों को आप में खुशियां दिखती हैं जो शायद आप में कभी थी ही नहीं।

लोगों के द्वारा आपके काम की सराहना आपको उत्साहपूर्ण कार्य करने की प्रेरणा देता है आप अपने कार्य को निर्भय होकर पूरा करते हैं भयमुक्त, चिंता रहित कार्य आपको संतोष देता है और जो कार्य आपको संतोष दे वह जीवनदायक होता है जिससे आप कभी थकान महसूस ही नहीं करते और हमेशा उत्साह पूर्ण अपने कार्य में संलग्न रहते हैं।

कर्म ज्ञान से अज्ञात मानव कोई महामानव नहीं केवल अज्ञानी ही हो सकता है। कर्मों का सच्चा अर्थ सिर्फ उनको करना मात्रा में नहीं अपितु उन्हें परमार्थ सार्थक रूप से करने में है फल की इच्छा के वशीभूत किया गया कोई भी कार्य तनावपूर्ण हो सकता है जबकि परहित में किया गया स्वार्थ रहित कार्य पूर्णता की ओर ले जाता है मनुष्य के द्वारा उसके कर्मों का चयन ही उसकी उत्कृष्ट का परिचायक है।

मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसकी इच्छाशक्ति नहीं है। समस्त इच्छाओं का संकल्प की सीमा का स्पर्श कर पाना आवश्यक नहीं है। जब इच्छाएं बुद्धि, विचार और दृढ़-भावना से परिष्कृत हो जाती हैं तब ही संकल्प बन पाती हैं। उद्देश्य पूर्ति के लिए इच्छा की अपेक्षा संकल्प अधिक प्रबल है। दृढ़ संकल्प ही सफलता की जननी है। संकल्प वह इच्छाशक्ति है जो भयंकर व्यवधान और विकट परिस्थितियों के बीच भी सफलता की मंजिल तक पहुंचा देती है। अनेक संकल्प-विकल्प इस सूक्ष्म जगत में विद्यमान हैं, लेकिन उनका लाभ मनुष्य को तब ही मिल पाता है जब पूर्ण मनोयोगपूर्वक एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए व्यक्ति प्रवृत्ता होता है।

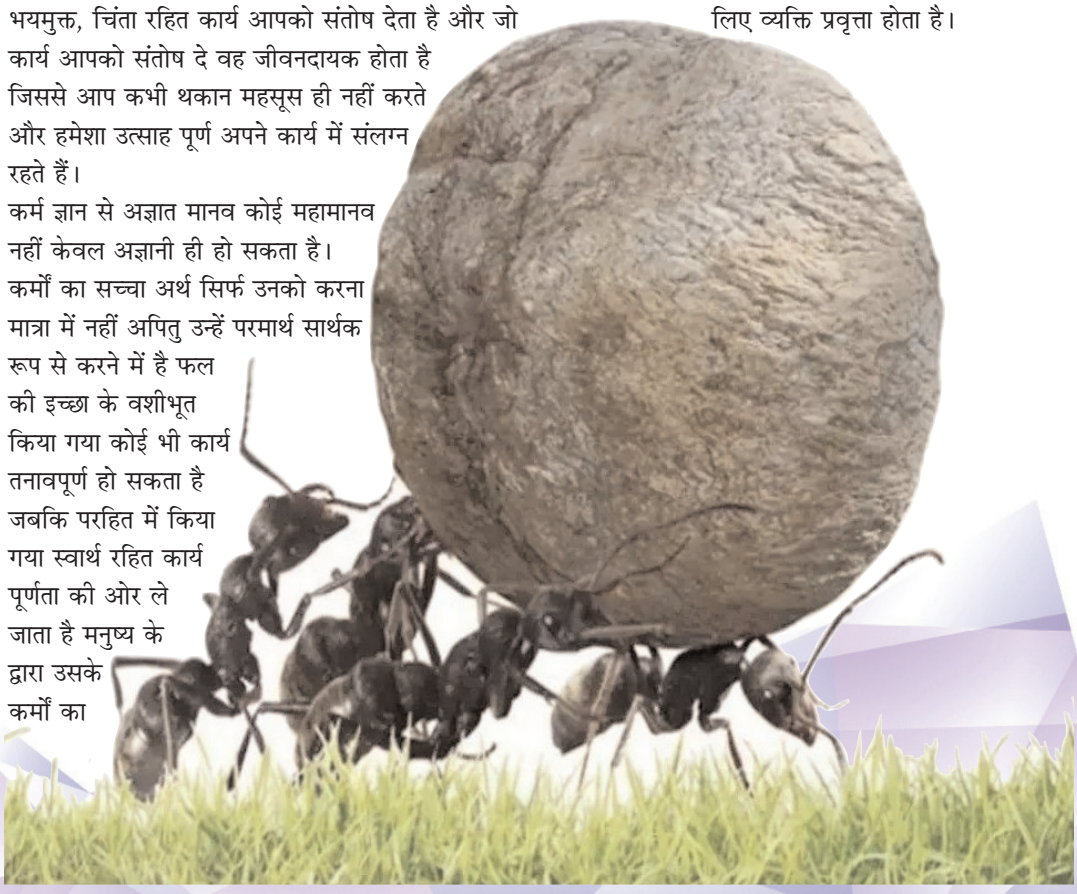

ग्रेटर नोएडा वेस्ट..बढ़ती आबादी या बर्बादी

राजेश गौतम
दैनिक भास्कर

ग्रेटर नोएडा वेस्ट के कई गांव में पिछले कुछ सालों में कैंसर पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है इसके पीछे जल प्रदूषण ही कारण बताया जा रहा है। डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण को लेकर एनजीटी काफी सख्त है। एनजीटी ने डूब क्षेत्र को चिन्हित करने और यहां से अवैध निर्माण हटाने के आदेश जारी कर दिए हैं। लेकिन गौतम बुद्ध नगर और गाजियाबाद के अधिकारी कार्रवाई करने के बजाय टालमटोल कर रहे हैं

ग्रेटर नोएडा वेस्ट कभी औद्योगिक क्षेत्र था। यहां पर नए और बड़े उद्योग लगाने की योजना थी। एनसीआर का केंद्र होने के कारण यह योजना तैयार की गई थी। लेकिन इस क्षेत्र की इसी खूबी ने अफसर और नेताओं की सोच परिवर्तित कर दी। माना जाता है इसके पीछे कुछ स्वार्थ जुड़े हुए थे। इसके चलते यहां पर एक के बाद एक कई सोसाइटियां बसा दी गईं। नतीजन यहां की आबादी तेजी से बढ़ने लगी। यहां वह माफिया सक्रिय हो गए। जिन्होंने इन क्षेत्रों में भी कॉलोनिया बसा दीं।

कोर्ट के स्थापना आदेश के बावजूद शाहबेरी में बड़े स्तर पर अवैध निर्माण किए गए। तत्कालीन प्राधिकरण के अधिकारी और अन्य जिम्मेदार अफसर आंख मूंदे रहे। जिसका नतीजा जुलाई 2017 में दो भवन देने से 9 बेकसूर लोगों की मौत के बाद सामने आया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कड़ी कार्रवाई के आदेश दिए इसके बाद कई बिल्डरों पर के दर्ज किए गए गैंगस्टर एक्ट में कार्रवाई की गई लेकिन इसके बाद फिर वही दस्तूर शुरू हो गया आज भी यहां अवैध निर्माण जारी है। इसके अलावा ग्रेटर नोएडा वेस्ट के कई गांव के आसपास लगातार कालोनियां काटी जा रही हैं।

पूर्व में जो हुआ वह मौजूद अधिकारियों के बस में नहीं है लेकिन वर्तमान में जो हो रहा है, उसे रोका जा सकता है। अन्यथा नतीजे शाहबेरी जैसे हो सकते हैं। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में लगातार आबादी बढ़ने से कई समस्या खड़ी हुई है इनमें सबसे प्रबल समस्या वायु और जल प्रदूषण की है। कई बार जानकारी मिली है कि यहां पर सीवर की व्यवस्था में होने के कारण गंदे पानी को हिंडन में भेजा जा रहा है। यह जल प्रदूषण का कारण बन रहा है ग्रेटर नोएडा वेस्ट के कई गांव में पिछले कुछ सालों में कैंसर पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है इसके पीछे जल प्रदूषण ही कारण बताया जा रहा है। डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण को लेकर एनजीटी काफी सख्त है। एनजीटी ने डूब क्षेत्र को चिन्हित करने और यहां से अवैध निर्माण हटाने के आदेश जारी कर दिए हैं। लेकिन गौतम बुद्ध नगर और गाजियाबाद के अधिकारी कार्रवाई करने के बजाय टालमटोल कर रहे हैं। आमजन और आने वाली पीढ़ी से जुड़े इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना होगा। अफसर, आमजन और मीडिया कर्मियों को इस समस्या से निजात पाने के प्रयास करने होंगे। जनप्रतिनिधियों को भी इस मामले में पहल करनी होगी। तभी आने वाले समय में खड़ी होने वाली गंभीर समस्याओं से निजात मिल पाएगी। यहां की बढ़ती आबादी जाम आदि समस्या भी पैदा कर रही है। निजी स्वार्थ को छोड़कर कुछ ऐसे फैसले लेने होंगे, जो जनहितकारी हों।

SHARDA UNIVERSITY
Beyond Boundaries

TOP GLOBAL FACULTY
- Distinguished faculty from Johns Hopkins, Harvard, Stanford, IITs, IISc, BHU, DRDO, CSIR, ISRO among others.
- Faculty with experience of working in USA, UK, Canada, Greece, Singapore, Japan, Russian Federation, among others.

GLOBAL OUTREACH
- Students from 95+ countries have experienced Sharda's unique culture and world-class campus life.
- Students can pursue a semester abroad at zero tuition fees in select global universities and get an edge over others.

ENCOURAGING STARTUPs
- Sharda Launchpad offers dedicated working space, industry mentorship and investment support for StartUp ideas.
- 6 cr+ of funds raised by StartUps.

FULFILLING DREAMS THROUGH SCHOLARSHIPS
- Upto 100% Scholarship to realise career dreams.
- 7515 students studying with Scholarship and Freeship worth Rs. 37.15 crore in 2023-24.

FOCUS ON PERSONALITY TRANSFORMATION
- Foreign language, Personality grooming and enhancement modules.
- Training for competitive exams like UPSC, CAT etc. through Sharda Skills.

WORLD-CLASS INFRASTRUCTURE
- 63 acre fully wi-fi campus with AC classrooms, AV aids, and numerous indoor & outdoor facilities.
- On-campus residences that are a 'home away from home' for students.

DISCOVER HOW YOU CAN
BE THE ONE
WHO'LL INSPIRE THE NEXT

RANKED 87 AMONGST ALL UNIVERSITIES IN INDIA — nirf RANKING 2023
AMONG THE TOP 5% OF HIGHER EDUCATION INSTITUTIONS IN INDIA — NAAC A+ NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
NBA ACCREDITED ENGINEERING PROGRAMMES — NBA NATIONAL BOARD OF ACCREDITATION
RANKED AMONG TOP 4% UNIVERSITIES IN ASIA — QS UNIVERSITY RANKINGS ASIA 2024
AMONG TOP 10 UNIVERSITIES IN NORTH INDIA FOR INNOVATION — ★★★★
MEMBERSHIP STATUS WITH ASIC, UK — ASIC ACCREDITATION SERVICE for INTERNATIONAL SCHOOLS, COLLEGES & UNIVERSITIES

INVITING APPLICATIONS FOR 130+ UG/PG/Ph.D. PROGRAMMES

Engineering • Management • Medical • Dental • Biotechnology • Computer Applications • Genetic Engineering • Stem Cell & Tissue Engineering
Food Science & Technology • Integrated Law • Architecture • Animation, VFX & Gaming • Design • Film, TV & OTT Production • Journalism & Mass Comm.
Basic Sciences • Humanities • Pharmacy • Nursing • Paramedical • Physiotherapy • Languages

UPTO 100% MERIT SCHOLARSHIP/FREESHIP
For details, visit: www.sharda.ac.in/scholarship

100% SCHOLARSHIP FOR 100 INNOVATIVE IDEAS
Mail your ideas to: ideas.scholarship@sharda.ac.in

SHARDA UNIVERSITY SUAT 2024 ADMISSION TEST
Apply Online: suat.sharda.ac.in

Campus: Plot No. 32, 34, Knowledge Park-III, Greater Noida (Delhi-NCR) 0120-4570000 www.sharda.ac.in

राकेश पंवार
दैनिक सच कहूँ

पल-पल मरते बेटियों के मां-बाप भारतीय समाज में दहेज एक अभिशाप?

बेटी की शादी में दहेज देने के कारण लिया कर्ज नहीं चुकाने के कारण आत्महत्या तक परिजन कर लेते हैं और वह दहेज के लोभी उन बहू बेटियों को कम दहेज मिलने के कारण उनका शोषण करते रहते हैं जिस कारण उन्हें तलाक या अधिकतर जान से भी मार दिया जाता है इस दहेज का दबाव बनाने में अधिकतर औरतों का ही हाथ होता है औरत ही दूसरी औरत को दहेज देने का दबाव समाज में बनाती देखी गई है

भारतीय समाज में दहेज एक बहुत बड़ी समस्या है इससे अछूता शायद ही को इंसान हो भारत में दहेज इतना विकराल रूप ले चुका है कि बेटियों के मां-बाप का सारा जीवन बेटियों की शादी करने के लिए धन जोड़ने में चला जाता है जो माता-पिता दहेज के लिए धन नहीं जोड़ पाते उन्हें या तो कर्ज लेकर बेटी का विवाह करना पड़ता है या अपनी संपत्ति बेचकर कितनी बार तो देखने में मिलता है की बेटी की शादी में दहेज देने के कारण लिया कर्ज नहीं चुकाने के कारण आत्महत्या तक परिजन कर लेते हैं और वह दहेज के लोभी उन बहू बेटियों को कम दहेज मिलने के कारण उनका शोषण करते रहते हैं जिस कारण उन्हें तलाक या अधिकतर जान से भी मार दिया जाता है ।

इस दहेज का दबाव बनाने में अधिकतर औरतों का ही हाथ होता है औरत ही दूसरी औरत को दहेज देने का दबाव समाज में बनाती देखी गई है और एक धारणा यह भी बन गई है कि जो लड़का ज्यादा काबिल पढ़ा लिखा सर्विसमैन होता है उस के विवाह में उतना ही ज्यादा दहेज देने के लिए समाज में उनके परिवार के लोग बेटी वालों पर दबाव बनाते हैं और अगर लड़के का घर ज्यादा मजबूत स्थिति में हो तो कहना ही कुछ और है जिस दिन भारत के सामाजिक ताने-बाने में यह मुहिम मुखर होकर चलाई जाएगी और भारत के पढ़े-लिखे युवा और युवतियां इस मुहिम में चढ़कर सहयोग करेंगे की कोई दहेज न लेगा और ना ही देगा तो उन गरीबों व मध्यम परिवार के माता-पिताओं को आत्महत्या एवं कर्ज के दबाव में नहीं आना पड़ेगा और वह अपनी बेटियों को बोझ नहीं समझेंगे। अपितु बेटियों के जन्म पर गौरव महसूस करेंगे और बेटियों को अच्छी शिक्षा और संस्कार दे सकेंगे जिससे भारतीय समाज में एक घर नहीं दो-दो घरों को रोशन करने में बेटियां योगदान देंगीं। तो हम सब मिलकर यह शपथ लेते हैं कि ना दहेज लेंगे ना देंगे। लिखना तो बहुत विस्तार से चाहता हूं परंतु सीमित शब्दों में लिखने का आग्रह है

रेखा गुर्जर
सामाजिक कार्यकर्ता,
संथापक - माता गुर्जरी पन्नाधाय ट्रस्ट

'क्या है डी.एन.टी'

क्रांति के बाद ब्रिटिश सरकार ने 198 वीर जातियों को 1857 के संग्राम को दोषी मानते हुए विश्व का सबसे क्रूर क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1871 में लगा दिया काला कानून गुर्जर, लोधी, राजभर, वाल्मीकि, जोगी, बंजारा, मल्लाह, पासी, राय, सिख, सांसी, खटीक सहित 198 जातियों के ऊपर लगाया गया उनकी जमीन ज्यादा जब्त करके निर्दयता से गोली, टोप ,फांसी से अंग्रेजी शासन में दुखद मौत दी जिससे देश में कोई भी उनका प्रतिरोध करने की हिम्मत ना जुटा सके और उनकी जमीन को अंग्रेजों के शासन में जब्त कर लिया गया

दस मई 1857 में स्वतंत्रता संग्राम क्रांति की शुरुआत हुई जिसका केंद्र दिल्ली बना और वर्तमान में एनसीआर के नाम से जाने वाले क्षेत्र को ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन से मुक्त करने का साहस क्रांतिकारियों ने कर दिखाया, जिसका नेतृत्व मेरठ से शहीद धन सिंह कोतवाल गुर्जर ने किया। इस क्रांति का असर पूरे देश में हुआ देश के लाखों वीरों ने शहादत दी देश में इस क्रांति से ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया लेकिन देश के कुछ गद्दार लोगों की मदद वजह से 1958 को विक्टोरिया (ब्रिटिश सरकार) का शासन आ गया।

इस क्रांति के बाद ब्रिटिश सरकार ने 198 वीर जातियों को 1857 के संग्राम को दोषी मानते हुए विश्व का सबसे क्रूर क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1871 में लगा दिया काला कानून गुर्जर, लोधी, राजभर, वाल्मीकि, जोगी, बंजारा, मल्लाह, पासी, राय, सिख, सांसी, खटीक सहित 198 जातियों के ऊपर लगाया गया उनकी जमीन ज्यादा जब्त करके निर्दयता से गोली, टोप ,फांसी से अंग्रेजी शासन में दुखद मौत दी जिससे देश में कोई भी उनका प्रतिरोध करने की हिम्मत ना जुटा सके और उनकी जमीन को अंग्रेजों के शासन में जब्त कर लिया गया। देश के कुछ गद्दार राजाओं को अंग्रेजों ने उनकी जमीनों को रेवड़ियों के भाव बांट दिया और प्रशासनिक उपयोगिताओं के नाम पर उनकी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा अपने पिट्ठुओं में बांट दिया गया। जिसके कारण लगभग 100 वर्षों तक इन जातियों को शिक्षा, रोजगार और अन्य सुविधाओं से वंचित रख गया ।

इन जातियों को 1871 से क्रिमिनल टाइप्स एक्ट से मुक्ति आजादी के 5 साल और 16 दिन के बाद 31 अगस्त 1952 को डीनोटिफाई ट्राइब्स एक्ट (DNT) बनाकर मिली। इस दिन को पूरे भारतवर्ष में DNT समाज विमुक्त जनजाति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जातियों के स्थान उत्थान हेतु भारत सरकार द्वारा 2015 मैं बी आर इदाते कमीशन बनाया गया था आयोग ने अपने रिपोर्ट 2018 में दे दी इस रिपोर्ट के आधार पर भारत सरकार के द्वारा में डीएनटी जातियों के उत्थान के हेतु डेवलपमेंट एंड वेलफेयर बोर्ड का डिनोटिफाइड नोमाडिक एंड सेमी नोमाडिक communities(DWBNDC) वर्ष 2019 में बना दिया गया भारत सरकार के समाज कल्याण के सचिव श्री और सुब्रमण्यम द्वारा दिल्ली सरकार को एक पत्र DO No.11020/2/2020 DWBNDC दिनांक 18 अगस्त 2020 को लिखा गया था जिसमें 31 दिसंबर को DNT समाज के लोगों के लिए जाति प्रमाण पत्र जारी करने के लिए कहा गया था कि इन वीर जातियां के लिए भारत सरकार के द्वारा इनके उत्थान के लिए शुरू की गई कल्याणकारी योजना का लाभ मिल सके। भारत सरकार से निरंतर यह छहज्ञ जातियां प्रार्थना और अनुरोध कर रही है कि यह प्रमाण पत्र इनको जारी किए जाए जिससे इन जातियों को पूर्ण लाभ मिल सके। अभी भी इन छहज्ञ जातियों को अपने हक की लड़ाई के लिए संघर्ष जारी है।

इंडी अलायंस का अस्तित्व ही संकट में...

डॉ अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

दिलचस्प है कि इंडी एलायंस का दूसरा प्रमुख घटक आम आदमी पार्टी है। आम आदमी पार्टी (AAP) के नेशनल कोऑर्डिनेटर और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में आप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कहा कि भाजपा और कांग्रेस ने हमारा 'गारंटी' और 'मैनिफेस्टो' शब्द तक चुरा लिया। अब ये लोग 'मोदी की गारंटी' और 'कांग्रेस की गारंटी' कहने लगे हैं। इन्होंने गारंटियां तो दीं, लेकिन किसी ने पूरी नहीं की। क्योंकि इनकी नीयत ठीक नहीं है। जबकि हम अपनी गारंटियां पूरी कर रहे हैं। केजरीवाल ने लोकसभा चुनाव के लिए पंजाब की 13 और चंडीगढ़ सीटों पर दावा ठोक दिया है। यही नहीं, उन्होंने कहा- कांग्रेस और भाजपा दोनों बड़ी पार्टियां ने देश पर 75 साल राज किया। ये लोग ऐसे ही इतनी आसानी से सत्ता नहीं छोड़ेंगे।

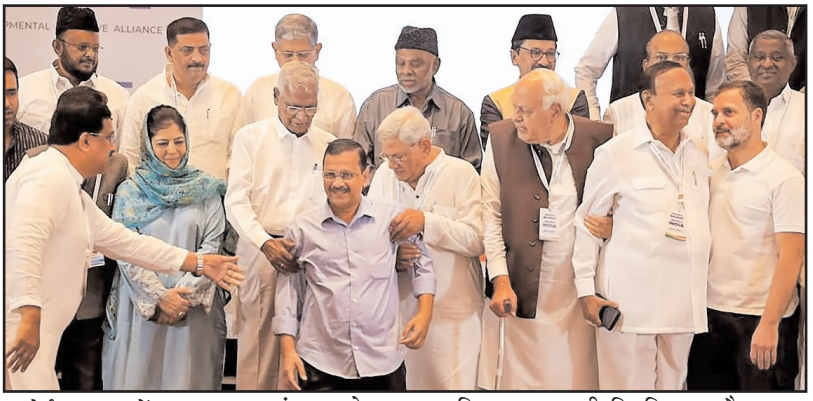

एक पुरानी कहावत है कि 'गांव बसा नहीं और मंगता आ गए'। लोकसभा चुनाव 2024 में एनडीए को चुनौती देने के लिए बनाए गए 28 दलों के कुनबे के बारे में यह कहावत बिलकुल सटीक बैठ रही है। इंडी एलायंस का गठन होने के बाद इस अलायंस की अनेक बैठकें हो चुकी हैं और न कोई एक सर्वसम्मत संयोजक है, न उसका कोई स्पष्ट एजेंडा तय हुआ है और न सीटों की शेयरिंग का कोई फार्मूला। इसके विपरीत इसके प्रमुख घटक दलों, कांग्रेस, टीएमसी, आप, जनता दल यूनाइटेड और सपा के बीच न केवल तू-तू , मैं- मैं हो चुकी है बल्कि टीएमसी और जेडीयू ने इस गठबंधन को अलविदा कर दिया है। आप ने भी पंजाब में लोकसभा चुनाव अकेले ही लड़ने की घोषणा कर इंडिया अलायंस के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लगा दिया है।

लोकसभा चुनाव होने में लगभग तीन महीने का समय शेष है लेकिन ये दल आपसी एका दिखाने की जगह एक दूसरे पर जमकर भड़ास निकालने में लगे हुए हैं और इंडी एलायंस का एक प्रमुख घटक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तो इन सबसे चार हाथ आगे हैं। वे अब पूर्व से पश्चिम की न्याय यात्रा करने की तैयारी में जुट हुए हैं। जबकि जिस सियासी दल भाजपा से उनको मुकाबला करना है वह देश भर में बूथ स्तर पर चुनाव लड़की तैयारी को में जुट गया है। इसका सबसे ताजा उदाहरण बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का है, जिन्होंने इंडिया अलायंस को अलविदा कहकर एनडीए का दामन पकड़ लिया है। दूसरा उदाहरण आप नेता एवं पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान का जिसमें उन्होंने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। मान ने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि आज उसकी स्थिति साफ है। जल्दी ही पंजाब और दिल्ली में माताएं अपने बच्चों को कि एक थी कांग्रेस की कहानी सुनाती दिखाई देंगी। यानि कांग्रेस का नामोनिशान मिटने वाला है। मान के इस बयान के बाद आप और कांग्रेस नेताओं के बीच सियासी बयानबाजी का पारा जबरदस्त तरीके से ऊपर चढ़ गया है। हालांकि आप और कांग्रेस के गठबंधन को लेकर मुख्यमंत्री मान के रुख में भी बदलाव झलक रहा है। उन्होंने कहा कि आईएनडीआईए की अगली बैठक में सीटों का बंटवारा होगा।

एक अन्य उदाहरण पश्चिम बंगाल का है। तृणमूल कांग्रेस के नेता कुणाल घोष ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस बीजेपी की दलाल है। घोष ने कहा कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी की दिल्ली कांग्रेस और पश्चिम बंगाल की कांग्रेस में बड़ा अंतर है। उन्होंने कहा कि पश्चमि बंगाल के 2021 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने तृणमूल कांग्रेस को बड़ा नुकसान पहुंचाया था और उसके चुनाव की वजह से बीजेपी को फायदा हुआ था। 2021 के चुनावों में टीएमसी बीजेपी को हराने के लिए ही चुनाव लड़ रही थी ,लेकिल कांग्रेस ने सीपीएम के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था और वोटों का ध्रुवीकरण किया था।

इन चुनावों में उसको जीरो हासिल हुआ था। इसलिए पश्चिम बंगाल राज्य कांग्रेस पूरी तरह से महत्वहीन है।

दिलचस्प है कि इंडी एलायंस का दूसरा प्रमुख घटक आम आदमी पार्टी है। आम आदमी पार्टी (AAP) के नेशनल कोऑर्डिनेटर और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में आप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कहा कि भाजपा और कांग्रेस ने हमारा 'गारंटी' और 'मैनिफेस्टो' शब्द तक चुरा लिया। अब ये लोग 'मोदी की गारंटी' और 'कांग्रेस की गारंटी' कहने लगे हैं। इन्होंने गारंटियां तो दीं, लेकिन किसी ने पूरी नहीं की। क्योंकि इनकी नीयत ठीक नहीं है। जबकि हम अपनी गारंटियां पूरी कर रहे हैं। केजरीवाल ने लोकसभा चुनाव के लिए पंजाब की 13 और चंडीगढ़ सीटों पर दावा ठोक दिया है। यही नहीं, उन्होंने कहा– कांग्रेस और भाजपा दोनों बड़ी पार्टियां ने देश पर 75 साल राज किया। ये लोग ऐसे ही इतनी आसानी से सत्ता नहीं छोड़ेंगे।

पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के परिणाम आने और राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा की बंपर जीत के नीतीश कुमार की पार्टी के नेता निखिल मंडल ने तीन राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस को नसीहत दे डाली है। जदयू के प्रदेश महासचिव मंडल ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा कि आईएनडीआईए को अब नीतीश कुमार के अनुसार चलना चाहिए। काग्रेस पांच राज्यों के चुनाव में व्यस्त होने की वजह से %इंडी अलायंस% पर ध्यान नहीं दे पा रही थी। अब तो कांग्रेस चुनाव भी लड़ लिया और परिणाम भी सामने है। इसके बाद उन्होंने एनडीए का थाम थाम लिया।

इसके पूर्व अखिलेश यादव ने भी कानपुर में कांग्रेस पर जोरदार निशाना साधा था। उन्होंने कहा था कि लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस को आईएनडीआईए गठबंधन के बारे में तय करना है कि यह गठबंधन राष्ट्रीय स्तर पर होगा या प्रदेश स्तर पर। अगर अभी प्रदेश स्तर पर गठबंधन नहीं किया गया तो भविष्य में भी प्रदेश स्तर पर गठबंधन नहीं होगा।इसमें दिलचस्प यह है कि विगत दिवस इंडी एलायंस की दिल्ली में सीटों के बंटवारे को लेकर बैठक हुई थी। उसी समय टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी और केजरीवाल ने बेहद चालाकी के साथ कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का नाम इंडी के संयोजक और पीएम पद के लिए प्रस्तावित कर न केवल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का पत्ता साफ कर दिया था बल्कि लंबे अरसे से पीएम पद का सपना देख रहे बिहार के मुख्यमंत्री एवं जेडीयू अध्यक्ष नीतीश कुमार के सपनों पर पानी फेर दिया था। और अब कांग्रेस पर आप की गारंटी और मैनिफेस्टो चुराने का आरोप लगाकर यह संदेश देने की कोशिश की है कि इंडी के घटकों के बीच जबरदस्त तनातनी चल रही है।

वास्तविकता तो यह है कि इंडी के घटकों के पास अभी तक न 'चेहरा' है, न 'सीट आबंटन' का कोई फार्मूला। जबकि उसको सामना करना है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में रचबस चुकी पार्टी भाजपा का। उसे मुकाबला करना है नरेंद्र मोदी जैसे सशक्त नेतृत्व का। ऐसे में अगर इंडी एलायंस समय से नहीं चेता तो उसके पास लोकसभा चुनाव के बाद फिर 'हाय ईवीएम' हाय सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग का राग अलापने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

अम्बाडीपुड़ी लक्ष्मी
संस्थापक, साईं अक्षरधाम विद्या पीठ

'अवसर की कमी को पाटना'

'शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है, क्योंकि कल उनका है जो आज इसकी तैयारी करते हैं' - मैल्कम एक्स

शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना सीखना नहीं है, बल्कि मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व को आकार देना है। एक बच्चा कच्ची मिट्टी की तरह होता है और अपने मूल स्वरूप में उसे मनचाहा आकार देना माता-पिता और शिक्षकों के हाथ में होता है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि आज हम जहां हैं वहां तक पहुंचने के लिए हमें उत्तम वातावरण और सर्वोत्तम संसाधन मिले और यही स्थिति हमारे बच्चों के साथ भी है जिनके बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हम हर संभव प्रयास करते हैं

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को उत्प्रेरित करती है। यह बच्चों को सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देने, जाति, पंथ, लिंग और आर्थिक बाधाओं को तोड़ने और अधिक समावेशी और प्रगतिशील समाज के निर्माण में योगदान करने के लिए सशक्त बनाता है। शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान और कौशल शक्तिशाली उपकरण बन जाते हैं जो न केवल व्यक्तिगत नियति को आकार देते हैं बल्कि एक व्यापक प्रभाव भी डालते हैं, जिससे परिवारों, समुदायों और समग्र रूप से राष्ट्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

वंचितों को बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो केवल आर्थिक कठिनाई, बुनियादी ढांचे की कमी और सामाजिक पूर्वाग्रहों तक ही सीमित नहीं हैं। ये बाधाएं अक्सर बच्चों को आगे बढ़ने और आगे बढ़ने के अवसर से वंचित कर उन्हें नुकसान के चक्र में फंसा देती हैं। इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए इन बाधाओं को दूर करने और एक समावेशी वातावरण बनाने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है जहां हर बच्चा आगे बढ़ सके, जिसे शिक्षा काफी हद तक हल कर सकती है।

व्यापक अर्थ में, शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना सीखना नहीं है, बल्कि मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व को आकार देना है। एक बच्चा कच्ची मिट्टी की तरह होता है और अपने मूल स्वरूप में उसे मनचाहा आकार देना माता-पिता और शिक्षकों के हाथ में होता है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि आज हम जहां हैं वहां तक पहुंचने के लिए हमें उत्तम वातावरण और सर्वोत्तम संसाधन मिले और यही स्थिति हमारे बच्चों के साथ भी है जिनके बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हम हर संभव प्रयास करते हैं। हालाँकि यही बात वंचितों, खासकर बच्चों-युवाओं के बारे में नहीं कही जा सकती, जिन्हें हम ट्रैफिक सिग्नलों पर दौड़ते, सड़क किनारे भिक्षा मांगकर अपना गुजारा करने के लिए सामान बेचते, या दिहाड़ी मजदूरों के बच्चों को देखते हैं।

हमें वंचित बच्चों की शिक्षा के लिए स्वामित्व और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देते हुए समुदाय को अपनी पहल में सक्रिय रूप से शामिल करना चाहिए। शिक्षा प्रत्येक बच्चे के भीतर की क्षमता को उजागर करने की कुंजी है। वंचितों की शिक्षा में निवेश करना सभी के लिए अधिक समान अवसरों वाले उज्जवल भविष्य में निवेश करने के समान है। निष्कर्षत:, शिक्षा एक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक मौलिक अधिकार होना चाहिए जो संभावनाओं की दुनिया के द्वार खोलता है। आइए हम सब मिलकर समाज को रोशन करते रहें और गरीबों तथा सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचितों के लिए निष्पक्ष, न्यायसंगत और प्रबुद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करें।

मोहित अधाना
संचार न्यूज

मोबाईल फोन की लत बच्चो को बना रही है डिप्रेशन का शिकार

ज्यादातर लोगों को यह लगता है कि मोबाइल से बच्चा नई टैक्नोलॉजी के बारे में सीखता है, लेकिन यह भी सच है कि इसके प्रयोग से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर असर पड़ता है। मोबाइल का प्रयोग दिमाग की रफ्तार को कम करने के साथ ही डिप्रेशन और स्ट्रेस जैसी समस्या को भी जन्म दे सकता है। ऐसे में माता-पिता को बच्चे के लिए नियम व शर्तें तय करनी चाहिए जिससे बच्चे को इस खतरे से बचाया जा सके।

आज के दौर में मोबाइल भी एक अधुनिक फैशन बन चुका है। फिर चाहे बच्चे हो, बड़े हो या बुजुर्ग, कोई भी इसके प्रयोग से अछूता नहीं रहा है। एक नहीं बल्कि दो-दो मोबाइल का प्रयोग फैशन बनता जा रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं छोटे बच्चों को खाना खिलाने या शांति से बैठाए रखने के लिए भी अकसर लोग उन्हें स्मार्ट फोन पकड़ा देते हैं। जबकि यह मोबाइल फोन आपके बच्चे की हेल्थ को गंभीर नुकसान पहुंचा रहा है। ऐसे में मोबाइल के प्रयोग से बच्चों को बचाने के लिए खेलकूद के पुराने तरीकों को अपनाने की जरूरत है जिससे बच्चे स्वस्थ और मोबाइल के खतरे से सुरक्षित रहें।

ज्यादातर लोगों को यह लगता है कि मोबाइल से बच्चा नई टैक्नोलॉजी के बारे में सीखता है, लेकिन यह भी सच है कि इसके प्रयोग से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर असर पड़ता है। मोबाइल का प्रयोग दिमाग की रफ्तार को कम करने के साथ ही डिप्रेशन और स्ट्रेस जैसी समस्या को भी जन्म दे सकता है। ऐसे में माता-पिता को बच्चे के लिए नियम व शर्तें तय करनी चाहिए जिससे बच्चे को इस खतरे से बचाया जा सके।

स्मार्ट फोन का ज्यादा प्रयोग सोचने और जानने की शक्ति को करते है प्रभावित

अक्सर देखा गया है कि बच्चों में किसी चीज़ को सीखने की अधिक ललक होती है, तो अधिक जिज्ञासा के कारण वह गलत चीज़ें सीख सकते हैं। इसके अलावा मेंटल हेल्थ पर भी नकारात्मक प्रभाव होता है अवसाद, नींद पूरी न होना जैसी समस्या होती है। बच्चे को मोबाइल का प्रयोग जितना कम समय के लिए होगा बेहतर है।

आज ज्यादातर बच्चे स्मार्टफोन, टैबलेट और लैपटॉप समेत कई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का जमकर इस्तेमाल करते हैं। कम उम्र के बच्चों की सेहत पर इसका काफी असर पड़ता है। स्मार्टफोन का ज्यादा इस्तेमाल करने से बच्चों को इसकी लत लग जाती है और वे बिना मोबाइल के खाना भी नहीं खाते हैं। हालांकि ऐसा करना बच्चों की मेंटल हेल्थ के लिए बेहद खतरनाक होता है। टेक्नोलॉजी, गैजेट्स और डिजिटल प्लेग्राउंड की भरमार से बच्चों को एंजाइटी और डिप्रेशन का खतरा बढ़ रहा है। इससे न केवल कम उम्र में उनकी आंखों की रोशनी प्रभावित हो रही है, बल्कि उनकी नींद का तरीका और चिंता का स्तर भी प्रभावित हो रहा है इससे बच्चों में डिप्रेशन का खतरा भी बढ़ रहा है।

ज्यादा देर फोन चलाना बच्चे नहीं बड़ों के लिए भी खतरनाक

कोरोनाकाल के बाद से दुनियाभर में लोगों का लाइफस्टाइल पूरी तरह से बदल चुका है। इसके सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ ज्यादातर नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले हैं। स्मार्टफोन या लैपटॉप पर ज्यादा समय बिताना, ऑनलाइन क्लासेस व वर्क फ्रॉम होम होने से लोगों में मोबाइल से चिपके रहने की बुरी लत लग चुकी है। अक्सर बच्चों को स्क्रीन से दूर रहने की सलाह दी जाती है. लेकिन बड़ो के लिए कितना स्क्रीन ज्यादा समय बिताना नुकसानदेह साबित हो रहा है।

गौतम बुद्ध नगर : एक ऐतिहासिक संघर्ष से लेकर आधुनिक विकास की ओर

राव संजय भाटी
वरिष्ठ पत्रकार

1997 में गौतम बुद्ध नगर जिले की स्थापना हुई और आज इसमें नोएडा, ग्रेटर नोएडा जैसे उप-महानगर, यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण शामिल हैं। दादरी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका मई 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रही, जिसमें क्रांतिकारी वीरों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

गौतम बुद्ध नगर जिले की स्थापना 9 जून 1997 को बुलंदशहर एवं गाजियाबाद जिलों के कुछ ग्रामीण व अर्ध शहरी क्षेत्रों को काटकर की गई थी आज इसमें नोएडा व ग्रेटर नोएडा जैसे उप महानगर शामिल हो गए हैं, दादरी विधानसभा क्षेत्र भी इसी जिले का एक हिस्सा बन चुका है। दादरी की 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका रही तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी टर्न बुल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि दादरी के 'इलाके में सर्वाधिक गड़बड़ी है'।

वर्ष 1874 में बुलंदशहर के डिप्टी कलेक्टर कुंवर लक्ष्मण सिंह ने 1857 की क्रांति को लिपिबद्ध किया, वह लिखते हैं कि दादरी रियासत के राव रोशन सिंह, राव उमराव सिंह, राव भगवंत सिंह, राव बिशन सिंह आदि ने मिलकर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ बगावत का झंडा उठाया था। अत: इस परिवार की सारी चल अचल संपत्ति अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त कर ली गई और राव रोशन सिंह तथा उनके पुत्रों व भाइयों को प्राण दंड दे दिया गया।

इस जन युद्ध के हिम्मत सिंह गांव (रानोली), झंडू जमीदार, साहब सिंह (नगला नैनसुख), मजलिस जमीदार (लुहारली), फत्ता नम्बरदार (चिटहेरा), हरदयाल सिंह गहलोत (नंगला समाना), हरदेव सिंह, रूपराम (बील), रामसहाय (खगुआबास), नवल, हिम्मत जमींदार (पेमपुर), कदम गुर्जर (प्रेमपुर), कल्लू जमीदार (चीती), करीम बख्श खान (तिल बेगमपुर), जब्ता खान (मुंडसे), मैदा, बस्ती (सांवली), इंदर सिंह, भोलू गुर्जर (मसौता), मुल्की गुर्जर (हृदयपुर), मुगनी गुर्जर (सेंथली), बंसी जमीदार (नगला चमरू), देवी सिंह जमीदार (महसे), दानसहाय (देवटा), बस्ती जमींदार (गिरधरपुर), फूल सिंह गहलोत (पारसेह), अहमान गुर्जर (बढ़पुरा), दरियाव सिंह (जुनेदपुर), इंदर सिंह (अट्टा), रामस्वरूप (गुनपुरा), सुरजीत सिंह (राजपुर), सुलेख (महावड), सुरजीत सिंह (अट्टा) आदि क्रांतिकारियों को अंग्रेजी सरकार ने 'रिंग लीडर' दर्ज कर मृत्यु दंड दिया।

मशहूर लेखक एम् .के .गांधी अपनी पुस्तक – "1857 : क्रांति व क्रांतिधरा " में लिखते है कि

" आम लोग क्रांति के लिए तन-मन-धन से तैयार हो गये थे , विशेषकर गुर्जरों ने तो इसे अपनी जाति की क्रान्ति ही घोषित कर दिया था जिसके कारण पूरे देश में लोग अंग्रेजो के विरुद्ध खड़े हो गये थे। "

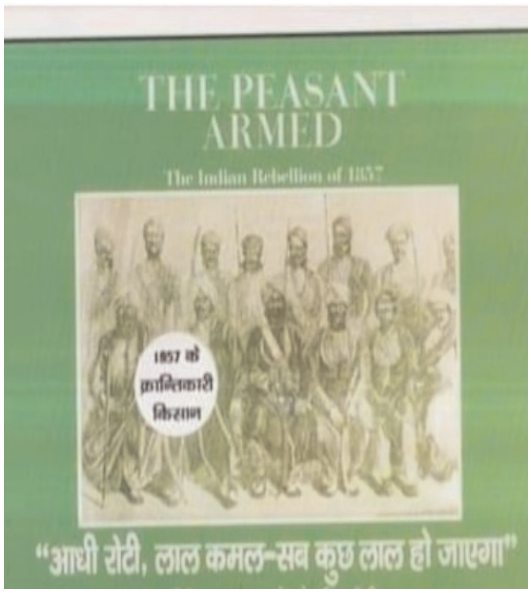

भारत की आजादी के लिए प्रथम क्रांति युद्ध में तोता सिंह कसाना (महमूदपुर लोनी), बिशन सिंह (बिशनपुरा), हरदयाल सिंह रौसा, रामदयाल सिंह, निर्मल सिंह (सरकपुर) सहित 84 क्रांतिकारियों को बुलंदशहर काला आम पर मृत्यु दंड दिया गया। वहीं अंग्रेजी सरकार द्वारा सैकड़ो क्रांतिकारियों को काले पानी की सजा दी गई जिसके चलते आज भी बुलंदशहर का काला आम चौराहा चर्चित है अंग्रेजी सरकार ने क्रांतिकारियों के परिवार की संपत्ति को छीन लिया उनके महलों को, घरों को ध्वस्त किया। दादरी में तत्कालीन कचहरी के स्थान पर आज बालिका विद्यालय संचालित है तथा बिसाहडा रोड पर प्राचीन शिव मंदिर व पक्का तालाब आज भी स्मृति के रूप में शेष हैं, दादरी रियासत की सारी जमीन जब्त कर अंग्रेजी सेना के पड़ाव के लिए दे दी गई। शहीदों की याद में दादरी तहसील परिसर में आज भी शहीद स्तंभ मौजूद है, दादरी में जीटी रोड पर राव उमराव सिंह की प्रतिमा स्थित है। शहीदों की याद में विभिन्न समाज सेवी संगठनों और प्रमुख लोगों द्वारा इन स्थलों पर 10 मई, 15 अगस्त और 26 जनवरी को कार्यक्रमों का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी जाती है। ग्रेटर नोएडा स्थित रामपुर जागीर गांव में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वर्ष 1919 में मैनपुरी षडयंत्र करके फरार हुए क्रांतिकारी राम प्रसाद 'बिस्मिल' भूमिगत होकर कुछ समय के लिए रहे थे। नोएडा ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे के किनारे स्थित नलगढ़ा गांव में 'सरदार भगत सिंह' ने भूमिगत रहते हुए कई बम परीक्षण किये थे। इस जिले का महत्व इसकी सीमा में आने वाली प्रमुख औद्योगिक इकाइयों दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, यमुना एक्सप्रेसवे अथॉरिटी, यूपीएसआईडीसी तथा न्यू नोएडा जैसे अत्यधिक विकासशील औद्योगिक प्राधिकरणों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में समायोजित कर लिए जाने से और भी अधिक विस्तृत हो गया है। जिले में गौतम बुद्ध नगर विश्वविद्यालय

आधा दर्जन निजी विश्वविद्यालय तथा कई प्रमुख इंजीनियरिंग, प्रबंध, विधि संस्थान व प्रमुख स्कूल व मल्टीनेशनल कंपनियां व आइटी कंपनिओं के आने से जिले में विकास को नए आयाम मिले हैं, यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण की योजनाओं के अंतर्गत एयरपोर्ट और फिल्म सिटी जैसी योजनाओं के आने से जिले के विकास को नए पंख मिल गए हैं। तथा न्यू नोएडा व अन्य कंपनियां औद्योगिक समूहों के आने की संभावनाओं से सब की उम्मीद बनी हुई है।

अतः जिले का इतिहास-वर्तमान गौरवशाली होने के साथ-साथ भविष्य भी नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है

प्रो उमेश कुमार, निदेशक
आईआईएमटी कॉलिज ऑफ़ पॉलिटेक्निक

NEP-2020 : शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बदलाव

भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति तैयार की गई है। यह मौजूदा शिक्षा नीति में पूर्ण परिवर्तन है जिसे अंतिम बार 1986 में लागू किया गया था। यह विद्यार्थी की आत्म-क्षमताओं और अवधारणा पर आधारित सीखने की प्रक्रिया है न कि रटने वाली प्रक्रिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ढांचा

वर्तमान नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की जगह ले चुकी है। नई शिक्षा नीति के बारे में चर्चा जनवरी 2015 में कैबिनेट सचिव टीएसआर सुब्रमणियन के नेतृत्व में समिति द्वारा शुरू की गई थी और 2017 में समिति द्वारा एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। 2017 की रिपोर्ट के आधार पर बनाई गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक मसौदा, 2019 में पूर्व इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) प्रमुख कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में नई टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जनता और हितधारकों के साथ परामर्श के बाद मसौदा नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई थी। नई शिक्षा नीति 29 जुलाई, 2020 को अस्तित्व में आई।

नई शिक्षा नीति में संरचनात्मक परिवर्तन

विद्यालय शिक्षा

10+2 मापांक को 5+3+3+4 मॉडल द्वारा बदल दिया गया है। यह निष्पादन कुछ इस प्रकार से किया जाएगा :

फाउंडेशनल स्टेज - इसमें तीन साल की प्री-स्कूलिंग अवधि शामिल होगी।

प्रारंभिक चरण - यह 8-11 वर्ष की आयु के साथ, कक्षा 3-5 का गठन करता है।

मध्य चरण - यह 11-14 वर्ष की आयु के साथ , कक्षा 6-8 का गठन करेगा।

माध्यमिक चरण - यह 14-19 वर्ष की आयु के साथ, कक्षा 9-12 का गठन करेगा। इन चार वर्षों को बहु-विषयक अध्ययन के लिए विकल्प के साथ जोड़ा जाएगा। अब केवल एक अनुशासन में अध्ययन करना आवश्यक नहीं होगा। छात्रों को केवल तीन बार, यानी कक्षा 3, कक्षा 5 कक्षा 8वीं में परीक्षाएं देनी होंगी।

'परख', निकाय की स्थापना की जायेगी जो छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करेगा।

उच्च शिक्षा

स्नातक कार्यक्रम एक लचीले निकास के साथ 4 साल का कार्यक्रम होगा। जिसमे एक वर्ष का पाठ्यक्रम समाप्त कर लेने के बाद छात्र को प्रमाणपत्र प्रदान किया जायेगा, इसके अलावा 2 वर्ष समाप्त कर लेने के बाद डिप्लोमा की डिग्री, स्नातक की डिग्री 3-वर्ष के बाद और 4-वर्ष पूरा कर लेने पर शोध कार्य और अध्ययन किए गए विषय से संबंधित खोज के साथ एकीकृत किया जाएगा।

विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को धन और वित्त प्रदान करने के लिए उच्च शिक्षा अनुदान परिषद रहेगी। यह एआईसीटीई और यूजीसी की जगह लेगा।

एनईईटी और जेईई आयोजित कराने के साथ-साथ विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के लिए आम प्रवेश परीक्षा के लिए राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी की जिम्मेदारी होगी।

मास्टर ऑफ फिलॉसफी पाठ्यक्रम बंद कर दिया जायेगा, क्योंकि यह परास्नातक और पीएचडी के बीच एक मध्यवर्ती पाठ्यक्रम था।

अनुसंधान और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरए) विकसित किया जाना है। विदेशी विश्वविद्यालय के परिसर हमारे देश में और उनके देश में हमारे परिसर स्थापित करेंगे।

शिक्षकों की शिक्षा और भर्ती

शिक्षकों के लिए 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड कार्यक्रम को अनिवार्य बना दिया। विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्री के संबंध में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए। शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता होनी चाहिए क्योंकि छात्रों के विकास के लिए एक शिक्षक ही केंद्रीकृत भूमिका में हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 के फायदे और नुकसान

लाभ : नई शिक्षा नीति शिक्षार्थियों के एकीकृत विकास पर केंद्रित है।

यह 10+2 सिस्टम को 5+3+3+4 संरचना के साथ बदल देता है, जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की प्री-स्कूलिंग होती है, इस प्रकार बच्चों को पहले चरण में स्कूली शिक्षा का अनुभव होता है।

परीक्षाएं केवल 3, 5 और 8वीं कक्षा में आयोजित की जाएंगी, अन्य कक्षाओं का परिणाम नियमित मूल्यांकन के तौर पर लिए जाएंगे। बोर्ड परीक्षा को भी आसान बनाया जाएगा और एक वर्ष में दो बार आयोजित किया जाएगा ताकि प्रत्येक बच्चे को दो मौका मिलें।

नीति में पाठ्यक्रम से बाहर निकलने के अधिक लचीलेपन के साथ स्नातक कार्यक्रमों के लिए एक बहु-अनुशासनात्मक और एकीकृत दृष्टिकोण की परिकल्पना की गई है। राज्य और केंद्र सरकार दोनों शिक्षा के लिए जनता द्वारा अधिक से अधिक सार्वजनिक निवेश की दिशा में एक साथ काम करेंगे, और जल्द से जल्द जीडीपी को 6% तक बढ़ाएंगे।

नई शिक्षा नीति सीखने के लिए पुस्तकों का भोझ बढ़ाने के बजाय व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ाने पर ज्यादा केंद्रित है। एनईपी यानी नई शिक्षा निति सामान्य बातचीत, समूह चर्चा और तर्क द्वारा बच्चों के विकास और उनके सीखने की अनुमति देता है। एनटीए राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालयों के लिए एक आम प्रवेश परीक्षा आयोजित करेगा। छात्रों को पाठ्यक्रम के विषयों के साथ-साथ सीखने की इच्छा रखने वाले पाठ्यक्रम का चयन करने की भी स्वतंत्रता होगी, इस तरह से कौशल विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। सरकार एनआरएफ (नेशनल रिसर्च फाउंडेशन) की स्थापना करके विश्वविद्यालय और कॉलेज स्तर पर अनुसंधान और नवाचारों के नए तरीके स्थापित करेगी।

नुकसान : भाषा का कार्यान्वयन यानि क्षेत्रीय भाषाओं में जारी रखने के लिए 5वीं कक्षा तक पढ़ाना एक बड़ी समस्या हो सकती है। बच्चे को क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा और इसलिए अंग्रेजी भाषा के प्रति कम दृष्टिकोण होगा, जो 5वीं कक्षा पूरा करने के बाद आवश्यक है। बच्चों को संरचनात्मक तरीके से सीखने के अधीन किया गया है, जिससे उनके छोटे दिमाग पर बोझ बढ़ सकता है।

निष्कर्ष : नई शिक्षा नीति कई उपक्रमों के साथ रखी गई है जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का संबंध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है। किसी भी चीज के सपने देखने से वह काम नहीं करेगा, क्योंकि उचित योजना और उसके अनुसार काम करने से केवल उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। जितनी जल्दी एनईपी के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतना ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर करेगा।

बाल मजदूरी अभिशाप ही नही, मानवता पर कुठारघात ?

जितेन्द्र सिंह सिसोदिया
एनसीआर लाइव

सार्वभौमिक रूप से मानव अधिकारों का मुख्य पहलू यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से हमेशा सुरक्षित महसूस करने का अधिकार है। हर व्यक्ति को हर समय भोजन, पानी और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरत का अधिकार है। कई देशों में, इन मौलिक अधिकारों को पूरा नहीं किया जा रहा है। हमारे समाज के लिए बाल मजदूरी एक अभिशाप है और मानवता के खिलाफ अपराध है

हमारे समाज के लिए बाल मजदूर एक अभिशाप है और मानवता के खिलाफ अपराध है। भारत और चीन जैसे देशों में अत्यधिक गरीबी और समाज और परिवारों के दबाव के कारण, 11 साल की उम्र में बच्चों को कम करने के लिए मजबूर करना, यह आज हमारी दुनिया में एक प्रमुख मुद्दा है।

बाल मजदूरी एक अभिशाप

बाल श्रम बच्चों की उम्र, प्रदर्शन के कार्य प्रकार, जिन शर्तों के तहत प्रदर्शन किया जा गया है, और व्यक्तिगत देश द्वारा किए गए उद्देश्यों पर निर्भर करता है। कुछ परिस्थितियों के कारण 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों द्वारा किए गए कार्य को बाल श्रम के रूप में जाना जाता है। इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन का अनुमान है कि 5 से 14 साल की उम्र के बीच दुनिया भर में लगभग 250 मिलियन बच्चे हैं। जो अब काम कर रहे हैं मानव अधिकारों का पूरा दायरा बहुत व्यापक है उनका मतलब है पसंद और अवसर। जैसे नौकरी प्राप्त करने की स्वतंत्रता, किसी की पसंद के साथ ही का चयन करना, व्यापक रूप से यात्रा करना, आदि। लेकिन सार्वभौमिक रूप से मानव अधिकारों का मुख्य पहलू यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से हमेशा सुरक्षित महसूस करने का अधिकार है। हर व्यक्ति को हर समय भोजन, पानी और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरत का अधिकार है। कई देशों में, इन मौलिक अधिकारों को पूरा नहीं किया जा रहा है। हमारे समाज के लिए बाल मजदूरी एक अभिशाप है और मानवता के खिलाफ अपराध है। भारत और चीन जैसे देशों में अत्यधिक गरीबी और समाज और परिवारों के दबाव के कारण 11 साल की उम्र में बच्चों को कम करने के लिए मजबूर करना, यह आज हमारी दुनिया के प्रमुख मुद्दा है यह एक बेहद खतरनाक माहौल है कि इन बच्चों को आमतौर पर महिलाओं के लिए सिलाई और पुरुषों के लिए खुदाई और निर्माण कार्यों में लगाया जाता है । भारत में, ऐसे कई मामले पाए गए हैं जहां बच्चों को गंभीर चोटें आई हैं और कभी-कभी मौत भी हुई है। पीतल उद्योग में, बच्चों को भट्टी को भूनने(हवा करने) और उसमें पिघला हुआ मोल्टन निकालने के लिए लगाया जाता है। यदि ऋुसिबल पिघला हुआ धातु चिमटे से फिसल जाता है, तो बच्चों को बिना पैरों के रहना होता है। अधिकांश विकासशील देशों में यह एक गंभीर मुद्दा है।बच्चों के विशाल कार्य में छोटे आयु वर्ग के बच्चे भाग लेते हैं। वे इस तथ्य से बचते हैं कि बच्चे राष्ट्र की बड़ी आशा है और भविष्य हैं। हमारे देश में लाखों बच्चे बचपन और पर्याप्त शिक्षा से वंचित हैं, जो एक खतरनाक संकेत है। इन बच्चों को स्वस्थ जीवन जीने का मौका नहीं मिलता क्योंकि वे बचपन से ही शारीरिक ,मानसिक और सामाजिक रूप से संतुष्ट नहीं होते हैं।

'पत्रकार की कलम'

शशांक अग्रवाल
राष्ट्रीय धरोहर, समाचार पत्र

पत्रकारिता ने मीडिया का भेष कब धर लिया और सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता कब मीडिया इंडस्ट्री में बदल गई। आज जब हम मीडिया इंडस्ट्री की बात करते हैं तो यह विशुद्ध व्यवसाय है और व्यवसाय सरोकार को नहीं, सहकार और लाभ की कामना करता है। शासन और सत्ता को भी सहकार लेना और लाभ देना सुहाता है इसलिए मीडिया जब इंडस्ट्री है तो सब जायज है लेकिन पत्रकारिता आज भी सौ फीसदी खरी है क्योंकि पत्रकारिता समाज की ताकत है

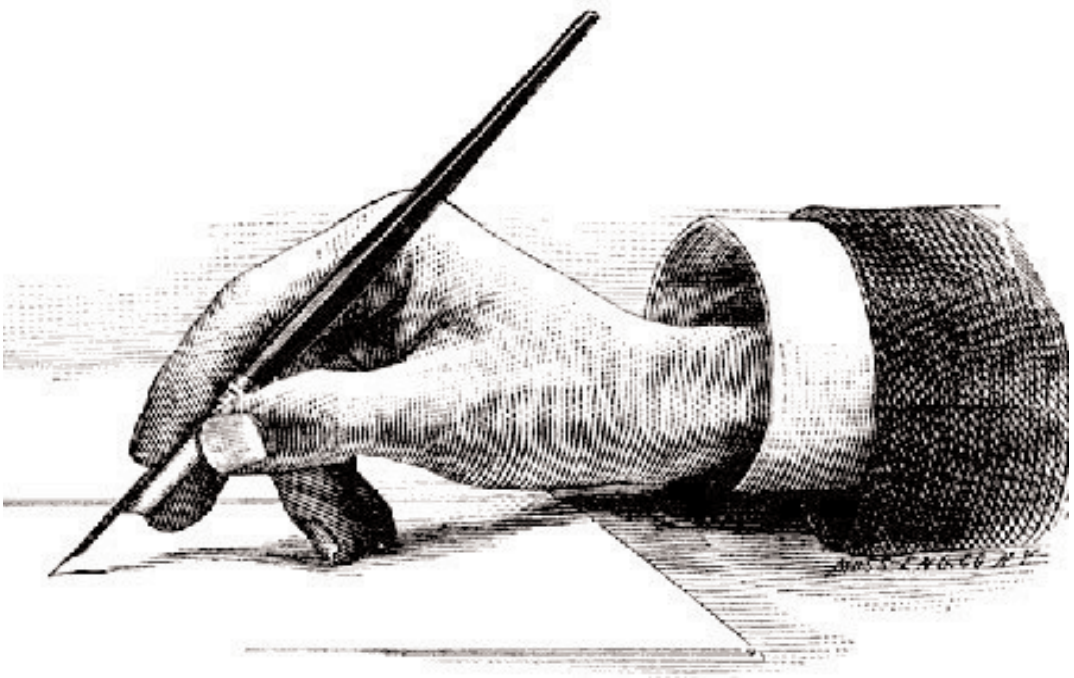

पत्रकार एक ऐसा स्तंभ है जो समाज के बीच हर समय खड़ा रहे देश दुनिया में होने वाली घटना ही नहीं समाज को जागरूक करने और उन जानकारियों को छापना जिससे समाज का कल्याण हो सके। सरकार बदलनी हो या जनता की सोच हर किसी के पीछे एक पत्रकार का बहुत बड़ा हाथ होता है इसलिए पत्रकारिता जैसे पद को चौथा स्तंभ कहा जाता है।

एक पत्रकार का कर्तव्य है कि वह अपने लिखे हुए हर शब्द को छापने या बोलने से पहले इन बातों का ध्यान रखें कि जो कुछ उसके द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है उससे संबंधित व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा क्योंकि देश में जब भी कुछ अच्छा या बुरा होता है। एक पत्रकार किसी भी बात की परवाह न कर सभी जानकारीयों को समाज के बीच तक पहुंचाता है। हर बार पत्रकारिता समाज के लिए अधिक उपयोगी और प्रभावकारी के माध्यम के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। इन सबके बावजूद इस बात को खारिज करने के बजाय चिंतन करना होगा कि पत्रकारों पर बने विश्वास पर सवाल क्यों उठ रहा है? इसका एक बड़ा कारण यह है कि अब पत्रकारिता में जो लोग आ रहे हैं, वह सामाजिक सरोकार से नहीं बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि के लिए पत्रकार बनने को लालाहित हैं।

पत्रकारिता ने मीडिया का भेष कब धर लिया और सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता कब मीडिया इंडस्ट्री में बदल गई। आज जब हम मीडिया इंडस्ट्री की बात करते हैं तो यह विशुद्ध व्यवसाय है और व्यवसाय सरोकार को नहीं, सहकार और लाभ की कामना करता है। शासन और सत्ता को भी सहकार लेना और लाभ देना सुहाता है इसलिए मीडिया जब इंडस्ट्री है तो सब जायज है लेकिन पत्रकारिता आज भी सौ फीसदी खरी है क्योंकि पत्रकारिता समाज की ताकत है।

'जर्मनी में भारतीयों के लिए नौकरी की अपार संभावनाएं '

कृष्ण कुमार शर्मा
निदेशक , क्रिसलिंगुआ

भारत के अलावा जर्मनी में रोजगार के अनगिनत अवसर उपलब्ध हैं। अगर आप डॉक्टर, नर्स , लैब असिस्टेंट या फ़िज़ियोथेरेपिस्ट हैं और विदेश में नौकरी करने के इच्छुक हैं, तो जर्मन सीखना आप के लिए बहुत ही लाभदायक होगा। जर्मनी में हैल्थ केयर वर्कर्स, इंजीनियर, होटल/ रेस्टोरेंट एक्सपर्ट, ट्रक ड्राइवर्स, एयरपोर्ट वर्कर्स और आईटी एक्सपर्ट्स इत्यादि की बहुत डिमांड है और ज्यादातर सेक्टर्स में जर्मन भाषा का ज्ञान होना आपको अच्छे वेतन की अच्छी नौकरी दिला सकता है

जर्मन भाषा यूरोप में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। जर्मनी के अलावा ऑस्ट्रिया एवं स्विट्ज़रलैंड में मुख्यत: जर्मन भाषा बोली जाती है। जर्मन सीखने से किसी के लिए भी अद्भुत अवसरों के द्वार खुल सकते हैं। जर्मन सीखने के बाद जर्मनी में मुफ्त उच्च शिक्षा की प्रबल संभावनाएं बनती हैं। कोई भी विद्यार्थी जर्मन सीखने के बाद ग्रेजुएशन अथवा वोकेशनल ट्रेनिंग अथवा स्नातक की पढाई के लिए जर्मनी जा सकता है, और पढाई के साथ-साथ नौकरी कर सकता है।

भारत में, विशेषतया बड़े शहरों में, बहुराष्ट्रीय कंपनियों , केपीओ, बीपीओ या स्कूलों में जर्मन भाषा के जानकारों की विशेष मांग रहती है। यदि आप धारा-प्रवाह जर्मन बोल सकते हैं तो आप निश्चित ही बहुत अच्छा वेतन पा सकते हैं।

भारत के अलावा जर्मनी में रोजगार के अनगिनत अवसर उपलब्ध हैं। अगर आप डॉक्टर, नर्स , लैब असिस्टेंट या फ़िज़ियोथेरेपिस्ट हैं और विदेश में नौकरी करने के इच्छुक हैं, तो जर्मन सीखना आप के लिए बहुत ही लाभदायक होगा। जर्मनी में हैल्थ केयर वर्कर्स, इंजीनियर, होटल/ रेस्टोरेंट एक्सपर्ट, ट्रक ड्राइवर्स, एयरपोर्ट वर्कर्स और आईटी एक्सपर्ट्स इत्यादि की बहुत डिमांड है और ज्यादातर सेक्टर्स में जर्मन भाषा का ज्ञान होना आपको अच्छे वेतन की अच्छी नौकरी दिला सकता है।

विगत जी 20 समिट के समय भारत एवं जर्मनी सरकारों द्वारा किये गए द्विपक्षीय समझौतों के बाद वीजा के कठोर नियमों को सरल किया गया है ताकि जर्मनी में लाखों रिक्त पदों को भरा जा सके।

विकसित भारत का प्रतिबिंब है, पत्रकार

नंदगोपाल वर्मा
पत्रकार व सामाजिक चिंतक

पत्रकारिता को समाज का दर्पण कहा जाता है,पत्रकार की इसी भूमिका के कारण जन मानस में पत्रकार व पत्रकारिता के प्रति आस्था और विश्वास कूट-कूट कर भरा है। पत्रकार अपनी कलम से किसानों मजदूरों पिछड़ों मजलूमों व्यापार व व्यापारियों उद्योग एवं उद्यमियों छात्र-छात्राओं युवाओं एवं वृद्धजनों, ज्ञान, विज्ञान, जमीन और आसमान तक की हर छोटी बड़ी घटनाओं को पत्रकारिता के माध्यम से उजागर कर संबंधित विभाग या अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करता है

ग्रेटर नोएडा – गौतमबुद्ध नगर – कृषि प्रधान भारत के किसानों व मजदूरों ने देश के चौमुखी विकास में नीव के पत्थर का काम किया है, लेकिन लोकतंत्र के चारों स्तंभ न्यायपालिका कार्यपालिका विधायिका एवं स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति, पत्रकारिता ने देश को उन्नति की ओरअग्रसरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूमिका निभाने में विशेष रूप से पत्रकारिता ही अग्रणी रही है, क्योंकि वह पत्रकार ही होता है जो संसाधनों के भाव के चलते भी जान जोख़िम के बीच रहकर भी पब्लिक, शासन-प्रशासन, सत्ता एवम सरकार के बीच सेतु का काम करता है और अपना कर्तव्य निभाता है। इसीलिए पत्रकारिता को समाज का दर्पण कहा जाता है,पत्रकार की इसी भूमिका के कारण जन मानस में पत्रकार व पत्रकारिता के प्रति आस्था और विश्वास कूट-कूट कर भरा है। पत्रकार अपनी कलम से किसानों मजदूरों पिछड़ों मजलूमों व्यापार व व्यापारियों उद्योग एवं उद्यमियों छात्र-छात्राओं युवाओं एवं वृद्धजनों, ज्ञान, विज्ञान, जमीन और आसमान तक की हर छोटी बड़ी घटनाओं को पत्रकारिता के माध्यम से उजागर कर संबंधित विभाग या अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करता है तथा समाज व राष्ट्र में घटित घटनाओं एवं संभावित अपेक्षाओं की ओर भी इंगित कर समाधान की ओरअग्रसरित करता है।

विशेष रूप से भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में पत्रकार ही हर गांव देहात खेत खलियानों के अलावा चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, मूलभूत सुविधाएं व आवश्यकताओं, छात्र-छात्राएं, युवाओं एवं वृद्धो, व्यापार व व्यापारियों, किसानों, मजदूरों एवं उद्योग व उद्योगपतियों,विभिन्न भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारियों, अपराध व अपराधियों आदि तक की समस्याओ एवं घटनाओं को उजागर कर समाधान की ओर ले जाकर विकसित भारत की असली तस्वीर चित्रण करता है, इसके बनाने में राष्ट्रवादी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। या यूं कहिए कि पत्रकार ही विकसित भारत का प्रतिबिंब है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नही ।

आज के दौर में कौन सी पत्रकारिता विश्वसनीय

आलोक वर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

बदलते दौर में पत्रकारिता के मायने भी बदल रहें हैं। इंटरनेट और वाट्स अप के दौर में अब समाचार पाने के लिए 24 घंटे का इंतजार नहीं करना पड़ता। लेकिन विश्वसनीयता किसी की घटी नहीं है। लेकिन ज्यादातर माध्यम इस समय केवल सूचना देने का काम कर रहे हैं खबर कोई नहीं दे रहा। मैं जहां तक जानता हूं खबर वह होती है जिसे कोई छिपाना चाह रहा है और हममें सो कोई उसे निकाल कर सार्वजनिक कर देता है। यानि पत्रकारिता सोए हुओं को जगाने का काम करती है

सर्वप्रथम समस्त पत्रकार बंधुओं, एजेंसियों, संपादकों,विज्ञापकों,लेखकों, साहित्यकारों सभी को बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' का हिन्दी रूपांतरण है और 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' से निर्मित है जिसका अर्थ होता है 'दैनिकी', 'दैनंदिनी', 'रोजनामा' अर्थात जिसमें दैनिक कार्यों का विवरण हो।

वास्तव में, आज जर्नल शब्द 'मैगजीन', 'समाचार पत्र', 'दैनिक अखबार' का द्योतक हो गया है। 'जर्नलिज्म' यानी पत्रकारिता का अर्थ समाचार पत्र, पत्रिका से जुड़ा व्यवसाय, समाचार संकलन, लेखन, संपादन, प्रस्तुतीकरण, वितरण आदि।

मगर बदलते दौर में पत्रकारिता के मायने भी बदल रहें हैं। इंटरनेट और वाट्स अप के दौर में अब समाचार पाने के लिए 24 घंटे का इंतजार नहीं करना पड़ता। लेकिन विश्वसनीयता किसी की घटी नहीं है। लेकिन ज्यादातर माध्यम इस समय केवल सूचना देने का काम कर रहे हैं खबर कोई नहीं दे रहा। मैं जहां तक जानता हूं खबर वह होती है जिसे कोई छिपाना चाह रहा है और हममें सो कोई उसे निकाल कर सार्वजनिक कर देता है। यानि पत्रकारिता सोए हुओं को जगाने का काम करती है।

खबर की समझ और चाहत रखने वाले आज भी और शायद आगे भी समाचार माध्यमों की विश्वसनीयता को परखना तरीके से जानते हैं। इसीलिए चाहे कोई कितना बड़ा बैनर हो, चाहे कोई कितना बड़ा एंकर हो पल भर में सोशल मीडिया पर ट्रोल भी होता है और मुकदमे भी झेलता है।

पत्रकारिता में जोखिम की जहां तक बात है तो मेरा मानना है कि पत्रकारिता में कल भी जोखिम था और आज भी जोखिम है। आपकी खुद की छवि और आपके शब्द यही दो चीजें पत्रकारिता की सबसे बड़ी आर्म्स हैं। हर काल में शीर्ष पर बैठे कुछ लोग पत्रकारिता की परिभाषा और संचालन अपने-अपने तरीके से करते रहे हैं।

ब्यूरोक्रेसी को बहुत करीब से और दशकों से देखने के कारण मैं कल और आज में यह जरूर पाता हूं कि कल ब्यूरोक्रेसी का कोई सूत्र पत्रकारिता में नहीं होता था बल्कि हमारे सूत्र ब्यूरोक्रेसी की जड़ो में बैठे थे। आज की दौर में उल्टा हो गया है हम पत्रकार खुद ही सिस्टम को अपनी दुनिया में घुसपैठ करने को आमंत्रित किए बैठे हैं। इसीलिए सिस्टम के पास आज हर मीडिया समूह के शीर्षस्थ लोगों तक पहुंच और समूह की सारी उंची नीची खबरें होती हैं मगर मीडियाकर्मियों के पास सिस्टम की खबरें ना के बराबर होती हैं।

बदलते परिवेश में पत्रकारिता को सोशल मीडिया ने काफी प्रभावित किया है लेकिन सोशल मीडिया में भ्रामक प्रचार ने कई तरह का तनाव भी पैदा किया है। ऐसे में उन तथ्यों को जांच परख कर उसे आगे बढ़ाया जाना चाहिए, जो सोशल मीडिया माध्यम से आई हों।

यदि आज की पत्रकारिता ने अपने स्वरुप को नहीं बदला तो पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी। ऐसे में पत्रकारिता की साख को बचाने के लिए भी जन समस्याओं से जुड़े रहने की आवश्यकता है।

ADMISSION OPEN
F-1, Ecotech, Extension-I, Greater Noida
For Nursery to IX & XI
SESSION
2024-25
MR. LEKHRAJ SINGH
Chairman Sir
H.L. INTERNATIONAL SCHOOL
A Co-Educational, Senior Secondary School, Affiliated to CBSE
Email : info@hlischool.in
Website : www.hlischool.in

DPS NTPC VIDYUTNAGAR
Under the aegis of DPS Society
Established in 1988
Best School in the region
Only school selected by CBSE for SAFAL
A Home away from Home
RANKED # 1 CBSE SCHOOL
IN DADRI REGION
ADMISSIONS OPEN
NURSERY, KG-1, KG-2, I TO IX
(ACADEMIC YEAR 2024-25)
IN SYNC WITH NEP 2020
Early Bird will
get concessions
as per
school policy.
Register
Now!
SCAN ME
0120-2671331, 8800641788
pdpsvn@gmail.com
www.dpsvndadri.in

दीपक सिंघल
अमर उजाला

पर्यटन स्थलों के दर्ज की दरकार

प्राचीन मंदिर की ओर विशेष ध्यान देने वाली भाजपा सरकार के कार्यकाल में भी यह मांग अधूरी है। सरकार ही नहीं अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी इस ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अभी भी लोगों को उम्मीद लगी है

उत्तर प्रदेश का शो विंडो कहे जाने वाला गौतमबुद्ध नगर प्राचीन मंदिरों से भी जाना जाता है। इन मंदिरों का इतिहास रामायण और महाभारत से भी जुड़ा है। यहां दनकौर में द्रोण मंदिर, खूपुरा में प्राचीन नानकेश्वर मंदिर और बिसरख में रावण मंदिर के नाम से मशहूर प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। यहां के मंदिर देश ही नहीं विदेश में भी पहचान बना चुके हैं। विडंबना है कि जिला और वे मंदिर अब तक पर्यटन स्थल के रूप में पहचान नहीं बना पाए हैं। इसे पर्यटन स्थल के रूप विकसित किया जाना चाहिए। पूर्व की सरकारों में निवासियों की ये मांग पूरी नहीं हो सकी। लेकिन प्राचीन मंदिर की ओर विशेष ध्यान देने वाली भाजपा सरकार के कार्यकाल में भी यह मांग अधूरी है। सरकार ही नहीं अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी इस ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अभी भी लोगों को उम्मीद लगी है।

दनकौर का द्रोण मंदिर

दनकौर कस्बे में द्रोणाचार्य का प्राचीन मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से मना कर दिया तो वह उनकी मूर्ति बनाकर अभ्यास करने लगे। द्रोणाचार्य ने इसी स्थान पर एकलव्य से उनके दाहिने हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा में मांगा था। एकलव्य ने भी गुरु दक्षिणा में अपने दाहिने हाथ का अंगूठा काट दिया था। महाभारत काल से जुड़े इस प्राचीन स्थल पर धार्मिक पर्यटन को विकसित करने के वादे तो किए गए लेकिन इस ओर अब तक कोई ठोस कदम नहीं बढ़ा है। प्राचीन द्रोणाचार्य मंदिर के पास डोण कुंड है। दोनों स्थान एएसआई द्वारा संरक्षित हैं। द्रोणाचार्य का मंदिर छोटा लेकिन कलात्मक है। दीवारों पर चित्रकारी है। गर्भगृह में स्थित एकलव्य द्वारा बनाई गुरु द्रोणाचार्य की मूरत दर्शनीय है। भक्तों के पूजन-अर्चना के लिए द्रोणाचार्य की नवीन मूर्ति स्थापित की गई है। प्रांगण में बांके बिहारी का भी मंदिरी है। यहां देश भर के लोग दर्शन के लिए आते हैं।

बिसरख का शिव मंदिर

जहां लंकेश ने की पूजा बिसरख गांव में प्राचीन शिव मंदिर को रावण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की बाहरी दीवारों पर सीमेंट से रावण व उनके परिवार की बड़ी प्रतिमाएं बनी हैं। मंदिर के अंदर प्राचीन शिवलिंग हैं जो बाहर से ही दिखाई देता है। दूर से दूर से लोग आज भी इस मंदिर के दर्शन के लिए आते हैं। कहा जाता है कि ये शिव भक्त रावण की जन्म स्थली है। कभी रावण के पिता ऋषि विश्रवा की बिसरख तपोस्थली थी। रावण के जन्म के लिए उन्होंने इसी जगह पर शिवलिंग की स्थापना कर पूजा-अर्चना की थी। उवन के जन्म के बाद वह भी यहां आकर पूजा-अर्चना करते थे। रावण के पिता विश्रवा पंडित के नाम पर इस जगह का नाम बिसरख रखा गया था। यहां पहले रावण दहन भी नहीं होता था। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के दिन यहां विशाल धार्मिक आयोजन किया गया।

प्राचीन नानकेश्वर मंदिर

रबूपुरा में यमुना की तलहटी पर प्राचीन नानकेश्वर मंदिर स्थित है। इस मंदिर पर शिवरात्रि व सावन में प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शनों के लिए पहुंचते हैं। इस मंदिर में जिले ही दूसरे राज्यों के श्रद्धालु भी कांवड़ चढ़ाते हैं। इस दौरान यहां मेला लगता है। पुलिस प्रशासन को इस मंदिर पर लगने वाले मेले की सुरक्षा व्यवस्था के लिए कड़ी मेहनता करनी पड़ती है। लेकिन विडंबना ये है कि इस मंदिर को न तो पर्यटन स्थल का दर्जा मिल पाया है और न ही यहां यातायात की व्यवस्था की गई है। हालांकि हाल ही में खूपुरा से क्स सेवा की शुरुआत हुई है। लेकिन रबूपुरा करने से मंदिर की दूरी लगभग छह किमी है। इसके चलते या तो श्रद्धालु अपने वाहनों से या फिर पैदल ही मंदिर तक पहुंचते हैं।

।। आचार्य काली महराज ।।
आध्यात्मिक गुरु

जिन्दगी में सब अच्छे के लिए होता है

।। जय माता दी ।।

*** जीवन में अगर सकून शान्ति चाहते हो तो बस एक नियम मजबूती से पकड़ लो।**
जो व्यवहार हमे पसंद नही है। वो व्यवहार दूसरो के साथ भी ना करो।
इस एक नियम से ही आप सकून और शान्ति का अनुभव करोगे।

* जिन्दगी में जो कुछ भी होता है। अच्छे के लिए होता है। बुरा वक्त इसलिए आता है। ताकि हम अच्छे वक्त की कीमत जान सके और लोग इसीलिए बदल जाते है। ताकि हम उनके असली चेहरे पहचान सकें। कि वो क्या थे। और हम उन्हे क्या समझ रहें थे।

* उगते हुए सूरज और दौड़ते हुए घोड़े का चित्र लगा लेने भर से भाग्य नही बदलता।
बल्कि भाग्य बनाने के लिए सूरज से पहले जागना और पूरे दिन घोड़ों की भाती दौड़ना पड़ता है।
तभी जाकर इंसान को सफलता प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

* धन से हम जीवन की सारी सुख सुविधाएं तो हासिल कर सकते हैं। पर जीवन में सकून केवल अच्छे कर्मों से ही आता है।
सब कुछ अपने तय समय पर ही होता है। एक माली एक पेड़ में सौ बाल्टी पानी दे सकता है। लेकिन फल अपने मौसम में ही आते हैं।

* जब हमारा जन्म हमारी मर्जी से नही होता और मरण भी हमारी मर्जी से नही होता। तो इस जन्म मरण के बीच में होने वाली सारी व्यवस्थाएं हमारी मर्जी से कैसे हो सकती है। इसीलिए कर्म के बाद फल की इच्छा ईश्वर पर छोड़ दो।

*मरी हुई मछली धारा के साथ बहती है। लेकिन जीवित मछली धारा के विपरीत तैरती है। अगर आप जीवित हैं। तो गलत का विरोध करना सीखे।

प्राचीन मंदिर की ओर विशेष ध्यान देने वाली भाजपा सरकार के कार्यकाल में भी यह मांग अधूरी है। सरकार ही नहीं अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी इस ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अभी भी लोगों को उम्मीद लगी है

प्रासंगिक रह गई है पत्रकारिता?

हेमेन्द्र सिंह राजपूत
जन प्रवाद

मीडिया और राजनीतिक दलों के बीच सरोकार देखिए, एक नया खेला शुरू हो गया। जिसे 'पेड न्यूज' नाम दिया गया। कुछ समय तक यह खेल धड़ल्ले से चला। समय ने करवट ली। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक के साथ संचार क्रांति ने सोशल मीडिया नामक तीसरी मीडिया को जन्म दिया। जब इसका जन्म हुआ तो हर कोई पत्रकार बन गया। इन पत्रकारों ने ऐसी पत्रकारिता की कि पूर्व की दोनों मीडिया बेअसर सी हो गईं

आजादी पूर्व और आधुनिक पत्रकारिता में न सिर्फ बदलाव आया है, बल्कि इसके मायने भी बदल गए। इसका मुख्य कारण संस्थानों का व्यावसायीकरण और इनसे जुड़े पत्रकार भाइयों द्वारा इसे संपूर्ण रोजगार मान लेना रहा। इसका असर ये हुआ कि पूंजीपतियों ने बतौर व्यवसाय इसका विस्तार किया। प्रिंट मीडिया के बाद जैसे

ही इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने विस्तार रूप लिया इससे जुड़े कर्मियों की अचानक से मांग बढ़ गई। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आने के बाद इस क्षेत्र में एक नई क्रांति आई। हजारों की संख्या में शिक्षण संस्थान खुले और लाखों युवाओं ने इस क्षेत्र में अपना भविष्य देखना शुरू कर दिया, जो बदस्तूर जारी है। इसे मीडिया युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। चूंकि, मीडिया के प्रभाव की ऐसी बयार बही कि हर क्षेत्र में उथल-पुथल मच गई। कुछेक स्टिंग ऑपरेशन के भय से परोपकारी हो गए, तो वहीं बड़े व्यवसायियों ने इसे प्रचार-प्रसार का सटीक माध्यम बना लिया। यही नहीं, देश की राजनीतिक पार्टियां भी इसकी जद में आ गईं। केंद्र व राज्य सरकारों ने विज्ञापनों के माध्यम से अपने प्रचार-प्रसार को फैलाना शुरू कर दिया। जब इसकी अति हो गई तो खासकर चुनाव के समय इस पर व्यय रूपी सीमा से इसे बांध दिया गया।

सोशल मीडिया का उदय

मीडिया और राजनीतिक दलों के बीच सरोकार देखिए, एक नया खेला शुरू हो गया। जिसे 'पेड न्यूज' नाम दिया गया। कुछ समय तक यह खेल धड़ल्ले से चला। समय ने करवट ली। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक के साथ संचार क्रांति ने सोशल मीडिया नामक तीसरी मीडिया को जन्म दिया। जब इसका जन्म हुआ तो हर कोई पत्रकार बन गया। इन पत्रकारों ने ऐसी पत्रकारिता की कि पूर्व की दोनों मीडिया बेअसर सी हो गईं। असर इतना पड़ा कि बड़े से बड़े प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संस्थानों को इसमें कूदना पड़ा ताकि हम, तुम से अव्वल रहें।

सोशल मीडिया की गहराती जड़ें

राजनीतिक दलों को इसका असली असर 2014 लोकसभा चुनाव से पूर्व पीएम मोदी के बढ़ते कद के रूप में दिखा। इसके माध्यम से जनता में ऐसा असर हुआ कि मोदी लहर चल पड़ी और वे पीएम बन गए। सोशल मीडिया के विस्तार के बारे में उन्हें अंदाजा था इसलिए सरकार बनने के कुछ समय बाद प्रिंट मीडिया पर चाबुक चलना शुरू हो गया। ऐसे-ऐसे धुरंधर लपेटे में आए जो बिना गंवाए सरकारी विज्ञापनों के माध्यम से करोड़ों बिना डकार लिए गटक रहे थे। केंद्र सरकार ने ऐसा चाबुक चलाया कि हजारों की संख्या में समाचार पत्रों का रजिस्ट्रेशन रद्द हो गया। यहां तक कि कागज और विज्ञापन दोनों पर जीएसटी लगा दी गई, जो सही नहीं है।

पत्रकारों की स्वतंत्रता छीनने का आरोप

इससे फर्जीवाड़ा तो पूरी तरह से बंद हो गया, लेकिन इसकी मार रियल संस्थानों पर भी पड़ी। ऐसे में जो पत्रकार बेरोजगार हो गए, उनके क्या हालात हुए होंगे आप अंदाजा लगा सकते हैं। बावजूद इसके उन्हें आप कहीं पर भी रोता-गिड़गिड़ाता नहीं देखते होंगे क्योंकि एक सच्चा पत्रकार अपने मान-सम्मान के आगे धन को कभी महत्व नहीं देता। हां, कुछेक पत्रकार चिल्ला रहे हैं कि सरकार पत्रकारों पर अत्याचार कर रही है, उनकी स्वतंत्रता छीन रही है ये सरासर गलत है। दरअसल, ये वहीं पत्रकार हैं जो पूर्व सरकारों में यह तय करते थे कि किस मंत्रालय में कौन मंत्री बनेगा। सरकारों का आशीर्वाद इन पर इतना था कि इनके पास न पहले कभी धन की कमी थी और न कभी होगी। क्योंकि, देश विरोधी ये पत्रकार भारत को बढ़ते कभी देख नहीं सकते। चूंकि, इनके परिवार का भरण-पोषण उन लोगों से होता है जो देश को छिन्न-भिन्न करने और गुलाम देखना चाहते हैं। देशहित का मुद्दा कोई भी हो इन्हें हजम नहीं होता और भारत विरोधी विश्वस्तरीय षड़यंत्र का ये हिस्सा बन जाते हैं।

प्रवीन चौहान
वरिष्ठ पत्रकार

दुनियाभर पर मंडराता प्रदूषण का खतरा

एक रिसर्च के अनुसार हमारे वातावरण में अभी ऑक्सीजन की मात्रा 22 प्रतिशत ही रह गई है। स्वच्छ हवा और ऑक्सीजन की कमी के कारण असमय जीव-जंतुओं की मृत्यु हो रही है और साथ ही कुछ प्रजातियां तो विलुप्त भी हो गई है। वैसे तो वायु प्रदूषण की समस्या कोई नई नहीं है क्योंकि अनेक प्राकृतिक कारणों जैसे ज्वालामुखी का विस्फोट, तेज हवाओं से मिट्टी के कणों का वायु में मिलना या जंगल की आग से प्राचीन काल से वायु प्रदूषण होता आ रहा है। जब से मानव ने आग का प्रयोग प्रारंभ किया, तभी से प्रदूषण का प्रारंभ हो गया, पशु चारण से उड़ने वाली रेत, खनन या गंदगी से सूक्ष्म जीवाणुओं का वायु में फैल जाना प्राचीन काल से होता रहा है।

वास्तव में मानव ने उद्योग, परिवहन, ऊर्जा आदि के क्षेत्रों में जो प्रगति की है उसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव वायु प्रदूषण के रूप में हो रहा है। यह संकट आज संपूर्ण विश्व पर गहराता जा रहा है। एक शोध के अनुसार अगर इसी तेजी से वायु प्रदूषण बढ़ता रहा तो सन 2050 तक पृथ्वी का वातावरण 4 से 5 डिग्री तक बढ़ जाएगा। जबकि अगर पृथ्वी का तापमान 2 से 3 प्रतिशत भी बढ़ता है, तो पृथ्वी के हिम ग्लेशियर पिघल जाएंगे, जिससे भयंकर बाढ़ आ सकती है और पूरी पृथ्वी नष्ट हो सकती है। प्रदूषण सभ्य दुनिया के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है, जिसका मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। जीव मंडल का आधार वायु है और वायु में उपस्थित ऑक्सीजन पर ही जीवन निर्भर है।

इसी से प्राणियों एवं जीव-जंतुओं को ऑक्सीजन प्राप्त होती है, और इसी से वनस्पति को कार्बन-डाई-ऑक्साइड मिलती है, जिससे उसका पोषण होता है। प्राणी वायुमंडल से ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और कार्बन-डाई-ऑक्साइड निष्कासित करते हैं, जिसे हरे पौधे ग्रहण कर लेते हैं और एक संतुलित चक्र चलता रहता है। किंतु इस संतुलन में उस समय रुकावट आ जाती है जब उद्योगों, वाहनों एवं अन्य घरेलू उपयोगों से निकलता धुआं एवं अन्य सूक्ष्म कण, विभिन्न प्रकार के रसायनों से उत्पन्न विषैली गैस, धूल के कण, रेडियोधर्मी पदार्थ आदि वायु में प्रवेश करके, स्वास्थ्य के लिए ही नहीं अपितु समस्त जीव-जगत् के लिए हानिकारक बना देते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम (एनसीएपी) पर जोर दिया है। एनसीएपी पर काम कर वायु प्रदूषण को काफी हद तक रोका जा सकता है। नागरिकों को भी वायु प्रदूषण के प्रति जागरूक करने की जरूरत है। एनसीएपी प्रोग्राम की मदद से भारत को प्रदूषण मुक्त बनाने में मदद मिल सकती है। वायु प्रदूषण प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में से एक है। विश्व स्वास्थ संगठन (डब्ल्यूएचओ) के आंकड़ों के अनुसार हर साल लगभग 7 मिलियन लोगों की मौत वायु प्रदूषण की वजह से हो जाती है। वास्तव में वायु में उपस्थित गैसों पर बाहरी प्रभाव ही वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है। हमारे वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा 24 प्रतिशत थी लेकिन धीरे-धीरे इसकी मात्रा कम होती जा रही है।

किंतु तब तक यह समस्या नहीं थी, क्योंकि जनसंख्या सीमित थी, आवश्यकताएं कम थीं, ईंधन का उपयोग बहुत कम किया जाता था, प्राकृतिक वनों का पर्याप्त विस्तार था, जिसके कारण प्रदूषित पदार्थ पर्यावरण से अपने-आप ही नष्ट हो जाते थे, उनसे किसी प्रकार की हानि नहीं होती थी, क्योंकि वायुमंडलीय प्रक्रिया में स्वतः ही शुद्ध एवं संतुलित होने की अपूर्व क्षमता होती है। किंतु आज की औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने इस गणित को गलत कर दिया है, क्योंकि मानव तीव्र गति से वायुमंडल में अपशिष्ट पदार्थ विस्तारित करने लगा है, जो वायु प्रदूषण का मूल कारण है। किसी भी रूप में प्रदूषण, चाहे वह हवा हो या पानी, स्वास्थ्य के लिए एक पर्यावरणीय जोखिम है।

डब्ल्यूएचओ के वैश्विक वायु प्रदूषण डेटाबेस के अनुसार दुनिया के सबसे अधिक प्रदूषित 15 में से 14 शहर, भारत के हैं, जिसे हवा में रासायनिक, जैविक या भौतिक प्रदूषकों के मापन से पहचाना जा सकता है। कई प्रदूषक हैं जो मनुष्यों में बीमारी के प्रमुख कारक हैं, उनमें से, पार्टिकुलेट मैटर (पीएम), सांस के माध्यम से श्वसन प्रणाली में प्रवेश करते हैं, जिससे श्वसन और हृदय रोग, प्रजनन और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की शिथिलता और कैंसर होता है। बीमारियों में मुख्य रूप से श्वसन संबंधी समस्याएं जैसे क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी), अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, और फेफड़ों का कैंसर, हृदय संबंधी घटनाएं, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की शिथिलता और त्वचीय रोग शामिल हैं।

जन जन के 'राम'- एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण

मनोज तोमर
भारत लाइव 24 न्यूज

राम मंदिर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जल नहीं कार-सेवकों का रक्त है।इसमें पत्थर नहीं बलिदानों की मांसपेशियां हैं। इसमें सीमेंट नहीं समस्त सनातनियों का वह उद्घोष है 'रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे'। राम मंदिर कोई सामान्य मंदिर नहीं है क्योंकि इसे किसी राजा के आदेश पर नहीं बनाया जा रहा और ना ही इसमें किसी राष्ट्र की स्वर्ण मुद्राएं लगी हुई है। इसमें शबरी जैसी किसी विधवा, कार सेवा में गवा चुकी अपने पुत्र की वृद्ध मां के वे 20 रु हैं जिसका आधा उसने अपने नाम से दान किया और आधा अपने पुत्र के नाम से दान किया। राम मंदिर में गांव-गांव शहर से भेजे गए 10 रु, 20 रु, 50 रु दान से लेकर आस्थावान उद्योगपतियों के दान किया वह करोड़ रूपए है जो एक बालक को उसका घर देना चाहते हैं। वह बालक जिसकी सेवा के लिए स्वयं महाकाल को हनुमान के रूप में अवतरित होना पड़ा।

भारत के उत्तरी भाग में स्थित, भारत की राजधानी नई दिल्ली की सीमा से सटा , उत्तर प्रदेश भारत में भारतीयों और गैर-भारतीयों दोनों के लिए सबसे लोकप्रिय और एक स्थापित पर्यटन स्थल है। भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य, उत्तर प्रदेश में कई ऐतिहासिक स्मारक और धार्मिक स्थल हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी उत्तर प्रदेश बहुत विविधतापूर्ण है, इसके सुदूर उत्तर में हिमालय की तलहटी और केंद्र में गंगा का मैदान है । भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है।

अवध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जम्बूदीप,कभी भरत का रहा और भारत वर्ष हमेशा विदेशी आक्रांताओं (ईरानी,मुगलों और अंग्रेज) से सदैव से पीड़ित होता रहा। आज का आधुनिक भारत वर्ष से जो अब विश्व गुरु बनने जा रहा है, उस देश के लिए पीड़ित, कमज़ोर और दीन-हीन आदि जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है अथवा जाता रहा है।

अयोध्या का गौरवपूर्ण इतिहास और विवाद

वैसे तो संपूर्ण भारतवर्ष अपने आप में परिपूर्ण एवं चर्चा का विषय है किंतु पिछले दो वर्षों में जिस पवित्र स्थान की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है वह अयोध्या है। अयोध्या का दूसरा नाम अवध भी है। पुरुषोत्तम भगवान राम के बेटे कुश ने अपने पूर्वजों की जन्मस्थली पर अपने पूर्वजों की स्मृति में मंदिर बनवाया एवं भगवान कुश के बाद उनकी 44 पीढ़ियां ने वहां रहकर राज- काज किया।

राजा जयसिंह द्वितीय

सन 1700 के आसपास जब मुगल शासन अपने अंतिम दौर पर था।अयोध्या के लोगों ने भगवान राम के मंदिर के बारे में सोचना प्रारंभ कर दिया। सन 1717 जयपुर के राजा जयसिंह द्वितीय जो कि अपनी चतुर नीति के लिए भी प्रसिद्ध थे उनका सैयद भाइयों और मुगलों के साथ अच्छे संबंध थे कई बार उनके द्वारा प्रयास किए गए जावकि राम जन्मभूमि फिर से उनको मिल जाए लेकिन सन 1720-21 के मध्य में दोनों सैयद भाइयों की मृत्यु होने से इसके बाद राम मंदिर भूमि को प्राप्त करने की सारी संभावनाएं समाप्त हो गई।

राम मंदिर का तकनीकी पक्ष

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक भारत वर्ष में स्थापत्य कला की तीन शैलियों चलन में थी। जिनमें मुख्य नागर शैली थी। जिसका प्रभाव (कश्मीर से लेकर विन्ध) तक पाया जाता।

क्या राम मंदिर हिंदू क्रांति हैं?

बौद्धिक दृष्टि से भगवान राम को सिर्फ सनातन धर्म से जोड़ना या तुलना करना एक मूर्खता पूर्ण व्याख्या है। इस्लाम का आगमन मध्यकाल में हुआ। दक्षिण भारत में थोड़ा पहले ही इस्लाम का आगमन हो चुका था। प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति चलन में रही हैं। आर्य लोगों की अपनी एक संस्कृति थी और गैर-आर्यों लोगों की एक अपनी संस्कृति जैसे (मूर्ति पूजा,अवतारवाद,वेदों की परंपरा) थी।

राम-राज्य की संकल्पना

सनातन संस्कृति में राम द्वारा किया गया आदर्शासन रामराज्य के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में रामराज्य का प्रयोग सर्वोत्कृष्ट शासन या आदर्श शासन के रूपक (प्रतीक) के तौर पर किया जाता है। रामराज्य, लोकतन्त्र का परिमार्जित रूप माना जा सकता है। वैश्विक स्तर पर रामराज्य की स्थापना गांधीजी की चाह थी। गांधीजी ने भारत में अंग्रेजी शासन से मुक्ति के बाद ग्राम स्वराज के रूप में रामराज्य की कल्पना की थी।

राम मंदिर के आर्थिक प्रभाव

उत्तर प्रदेश में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर बनने से 10 करोड़ पर्यटक 1 साल में काशी आए। एक अनुमान के आधार पर अयोध्या में प्रत्येक माह 45 लाख पर्यटकों के आने का अनुमान है। यह आंकड़ा 1 साल में 6 करोड़ भी हो सकता है। उत्तर प्रदेश में सन 2022 में 31 5 करोड़ पर्यटक आए। वहीं 2023 में 32 करोड़ पर्यटकों का उत्तर प्रदेश आना हुआ। यह आंकड़ा सामान्य नहीं है उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग संपूर्ण विश्व के लिए एक रोल मॉडल है। वैसे तो पर्यटन में भारत की हिस्सेदारी मात्र दो प्रतिशत है लेकिन 2024 के अंत तक 32 करोड़ पर्यटकों के उत्तर प्रदेश आने का अनुमान है।

Krislingua
THE GERMAN LANGUAGE INSTITUTE

YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT.

KRISLINGUA: YOUR TRUSTED PARTNER FOR AUSBILDUNG EXCELLENCE.

APPLY NOW

CALL: 9634525727 www.krislingua.com

GharDekho

ONE STOP RESIDENTIAL PROPERTY SOLUTION PROVIDER

CALL:9667758489 | ghardekho.in @ghardekho

पवन बंसल
मो० 9311320045

जिला संयोजकः गौतमबुद्ध नगर
व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा
जिलाध्यक्षः गौतमबुद्ध नगर
उ.प्र. उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल
अध्यक्षः
श्री रामलीला कमेटी, दादरी

शिवम् मार्बल्स

मार्बल स्टोन, कोटा स्टोन, ग्रेनाईट, सीमेन्ट, टाईल्स
आदि के थोक व फुटकर विक्रेता

निकट भगवती नर्सिंग होम, रेलवे रोड, दादरी (गौतमबुद्ध नगर)
मो० 9311320045, 9311197150

SHERRWOOD PUBLIC SCHOOL
To Be Affiliated to C.B.S.E.

संस्थापक
चौ० महेन्द्र सिह प्रधान जी

Admission Open

SESSION 2024-2025

For Classes Nursery to Std. VIII

Registration

Admission forms are available on the Reception.
for any query please contact us:
Mob. No. 9953600164, 9811396836

Add: Ch. Mahendra Singh Pradhan ji, Farm, Bilaspur, Greater Noida, G.B. Nagar U.P.)
E-mail : sherrwoodpublicschool@gmail.com

मीडिया और संस्थान प्रबंधन के बीच मजबूत सेतु है जनसंपर्क अधिकारी

पंकज नरायण सक्सेना
पूर्व जनसंपर्क अधिकारी, एनटीपीसी

राम मंदिर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जल नहीं कार-सेवकों का रक्त है।इसमें पत्थर नहीं बलिदानों की मांसपेशियां हैं। इसमें सीमेंट नहीं समस्त सनातनियों का वह उद्घोष है 'रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे'। राम मंदिर कोई सामान्य मंदिर नहीं है क्योंकि इसे किसी राजा के आदेश पर नहीं बनाया जा रहा और ना ही इसमें किसी राष्ट्र की स्वर्ण मुद्राएं लगी हुई है। इसमें शबरी जैसी किसी विधवा, कार सेवा में गवा चुकी अपने पुत्र की वृद्ध मां के वे 20 रु हैं जिसका आधा उसने अपने नाम से दान किया और आधा अपने पुत्र के नाम से दान किया। राम मंदिर में गांव-गांव शहर से भेजे गए 10 रु, 20 रु, 50 रु दान से लेकर आस्थावान उद्योगपतियों के दान किया वह करोड़ रूपए है जो एक बालक को उसका घर देना चाहते हैं। वह बालक जिसकी सेवा के लिए स्वयं महाकाल को हनुमान के रूप में अवतरित होना पड़ा।

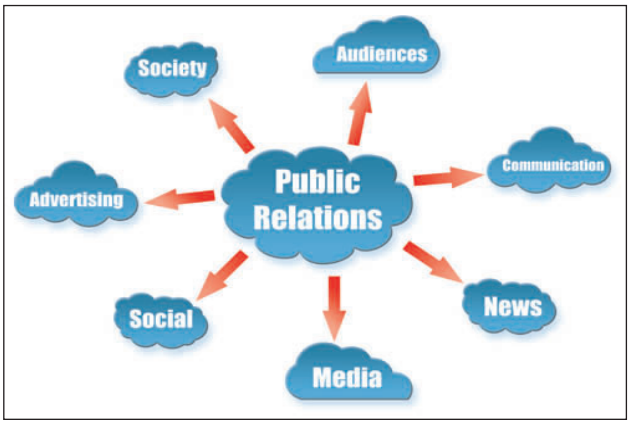

यूं तो एक संस्थान में विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रबंधन के लिए विभिन्न विभागों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। इनमें टेक्निकल विभागों के साथ साथ प्रशासनिक विभाग,मानव संसाधन विभाग, वित्त एवं लेखा विभाग आदि आते हैं।इन विभागों के साथ ही एक महत्त्वपूर्ण विभाग होता है जनसंपर्क विभाग। जनसंपर्क विभाग का प्रबंधन संस्थान द्वारा नियुक्त जनसंपर्क अधिकारी द्वारा किया जाता है।

मुख्यत: जनसंपर्क विभाग और जनसंपर्क अधिकारी का काम संस्थान और राष्ट्रहित की गतिविधियों का जनता में प्रचार प्रसार करना और मीडियाप्रतिधिनिधियों को संस्थान की दैनिक गतिविधियों और विशिष्ट उपलब्धियों की जानकारी उपलब्ध करवाना होता है। जनसंपर्क अधिकारी का संपर्क मुख्यतया मीडिया के साथ नियमित रूप से रहता है और उसका मुख्य काम मीडियाकर्मियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रख कर उनको संस्थान से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों और विशिष्ट उपलब्धियों की जानकारी देना होता है।

किसी किसी संस्थान में सामान्य जनमानस को जानकारी या सूचना देने के लिए भी जनसंपर्क अधिकारी ही एकल विंडो नोडल अधिकारी होता है। कहीं कहीं किन्हीं संस्थानों में जनसंपर्क अधिकारी को लोक संपर्क अधिकारी के रूप में भी जाना जाता है। यह सर्वमान्य है कि जनसंपर्क अधिकारी एक संस्थान या कंपनी और मीडिया (इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट, डिजिटल और सोशल मीडिया) के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी या एक मजबूत सेतु होता है।

संस्थान के एक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत जनसंपर्क अधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वो व्यक्ति स्मार्ट,मृदुभाषी और वाकपटु होना चाहिए और बातचीत का लहजा सरल, सहज होना चाहिए। जनसंपर्क अधिकारी को अपनी ड्रेस के प्रति भी सजग रहना चाहिए।जनसंपर्क अधिकारी के पास प्रोफेशनल क्वालिफिकेशन होने के साथ साथ उस व्यक्ति में लिखने पढ़ने की क्षमता होने के साथ साथ प्रेस विज्ञप्ति लिखना,प्रेस कांफ्रेंस आयोजित करवाने का अनुभव, आर्टिकल लिखना, रिपोर्ट तैयार करना आदि का अनुभव होना चाहिए। साथ ही संस्थान का समाचार पत्रों और टीवी एवं अन्य प्रचार माध्यमों द्वारा विज्ञापन प्रचार,पब्लिसिटी मैटीरियल आदि तैयार कराने की जिम्मेदारी भी जनसंपर्क अधिकारी की होती है। इसके अलावा संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों और अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों की फोटोग्राफी / वीडियोग्राफी/लाइव टेलीकास्ट आदि के आयोजन की जिम्मेदारी भी जनसंपर्क अधिकारी की होती है।

जनसंपर्क अधिकारी का चुनौतीपूर्ण काम बहुत ज़िम्मेदारी का भी है। एक कुशल जनसंपर्क अधिकारी को हर समय चौकन्ना रहना चाहिए। जनसंपर्क अधिकारी संस्थान के विभिन्न विभागों और अधिकारियों से समन्वय कर, जानकारी एकत्र कर फिर उसको आवश्यकता अनुसार तैयार करके मीडियाप्रतिनिधियों को उपलब्ध करवाता है।

मुख्यत: जनसंपर्क अधिकारी को दैनिक समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल समाचार पोर्टल और सोशल मीडिया आदि पर सजग , सतर्क और चौकन्ना रहकर संस्थान के बारे में न्यूज को मॉनिटर कर संस्थान के प्रमुख को दैनिक रूप से अवगत कराना होता है। अगर संस्थान की ओर से किसी भी प्रकार की न्यूज का खंडन या स्पष्टीकरण जारी करना हो तो वो मीडिया प्रबंधन की जिम्मेदारी जनसंपर्क अधिकारी की होती है। संस्थान के प्रमुख के प्रतिनिधि के रूप में जनसंपर्क अधिकारी की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण और ज़िम्मेदारी से भरपूर होती है। आज के बदलते हुए परिदृश्य में बदलती मीडिया की भूमिका के चलते संस्थान की ओर से मीडिया प्रबंधन में एक कुशल जनसंपर्क अधिकारी निश्चित रूप से मीडिया और एक संस्थान के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी और सेतु होता है।

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब कार्यकारिणी

नरेंद्र भाटी
अध्यक्ष

प्रणव भारद्वाज
उपाध्यक्ष

अंशुमन यादव
महासचिव

कैलाश चंद
कोषाध्यक्ष

नितिन शर्मा
कार्यकारिणी सदस्य

देवेंद्र शर्मा
कार्यकारिणी सदस्य

राकेश पंवार
कार्यकारिणी सदस्य

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब वर्तमान समितियाँ

आयोजन/कार्यक्रम समिति

अध्यक्ष – राजेश गौतम
सचिव – ताहिर सैफी
उपाध्यक्ष – सीएल मौर्य
सदस्य – भारत भूषण शर्मा
सदस्य – शशांक अग्रवाल

अनुशासन समिति

अध्यक्ष – जेपी शर्मा
सचिव – रजत कुमार
उपाध्यक्ष – अरुण त्यागी
सदस्य – इनामुल फारूकी
सदस्य – संजय कुमार

सदस्यता चयन समिति

अध्यक्ष – डॉ देवेंद्र शर्मा
सचिव – सुनील शर्मा
उपाध्यक्ष – अशोक छोकर
सदस्य – विकास शिशौदिया
सदस्य – ज्ञानेन्द्र सिंह

खेल समिति

अध्यक्ष – नितिन शर्मा
सचिव – राकेश पवार
उपाध्यक्ष – दीपक सिंघल
सदस्य – जितेंद्र शिशौदिया
सदस्य – गौरव शर्मा

MEMBERS OF GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

Narendra Bhati	ETV Bharat	9999328081
Anshuman Yadav	Tv9	8076819176
Pranav Bhardwaj	GROUND ZERO NEWS	7505183438
Kailash Chand	Swaraj express	9810432277
Nitin Sharma	Sach Kahoon	8860008477
Devendra Sharma	Panchayat 24	9560117179
Brajesh Tiwari	ABP News	9717667127
Arun Tyagi	Aajtak	9555392008
Ashish Jauhari	Sahara tv	9717794888
Himanshu Dwivedi	Zee news	9953158401
Sourabh Chaturvedi	India tv	9650298503
Abhishek Kumar	Zee news	9818135835
Shishpal Singh	Jan Satta	9958718533
Rakesh kr. Panwar	Sach Kahoon	8000008031
Tahir Saifi	Times Now	9871079084
Nand Gopal Verma	Rastriya Sahara	9760010870
Rao Sanjay Bhati	CityWeb	9810204400
CL Mourya	Amar Ujala	9560202700
Jai Prakash Sharma	Amar Ujala	9711190134
Sunil Sharma	Amar Ujala	9953272625
Deepak Kr. Sharma	Amar Ujala	9837017406
Deepak Singhal	Amar Ujala	9760281573

Rajat Kumar	India News	9870243596
Ashok Chhonkar	Dainik Hindustan	9759698244
Dr. Satish Sharma Jafravadi	Dainik Hindustan	7017817112
Rajesh Gautam	Dainik Bhaskar	9560798010
Mohit Adhana	Sanchar News	8368793374
Vikash Shishodia	India Republic	8527063285
Manoj Kumar	Future Line Times	8171486801
Ashu Bhatnagar	Ncr Khabar	9954531723
Rajesh Bairagi	Nek Dristi	9811313533
Gyanendra Singh	Deshabndhu	9411492655
Jitendra singh sisodiya	Ncr Live	9999855569
Asad Farqi	NBT	7417415372
Inam-ul-haqi farqi	Rastriya Sahara	9411671646
Shashank Agarwal	Rashtriya Dharohar	9205362959
Harveer Singh	Vedant current news	9718976101
Ajay Kumar	Sudarshan News	9634019002
Satish kr. Shrivastava	JMD News	966763233
Sunder Lal Sharma	Sudarshan Khoj	9999327002
Gourav Sharma	Sudarshan News	9654135370
Sunil Kumar	Sach Kahoon	9540141817
Sanjay Kumar	Ugata Bharat	9971696210
Bharat Bhushan Sharma	Face Warta	9871493277
Anil sharma	News Mail Times	9958783307

India's Premier Integrated Hotel, Redefining Luxury, Conventions and Exhibitions.

Altus Bar & Lounge	**Paprika** - all day dining restaurant	**Cafe Amaris** Patisserie & Brasserie	Spa by **Hibiscus**	Convention Hall

+91 120-6966555 info@expoinn.com www.expoinn.com

India Exposition Mart Limited, Plot no 23-25 & 27-29, Knowledge Park 2, Gate no-12, Greater Noida

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री, औद्योगिक विकास
उत्तर प्रदेश सरकार

Yamuna Expressway Industrial Development Authority
YEIDA
FUTURE IS HERE

यीडा के विकास यात्रा की उपलब्धियां

- **औद्योगिक भूखण्डों का आवंटनः** प्राधिकरण ने कलस्टर आधारित उद्योगों के विकास हेतु प्रभावी कार्यवाही की है। प्राधिकरण के औद्योगिक सेक्टरों में MSME पार्क, टॉय सिटी एवं हैण्डीक्राफ्ट पार्क एवं अपैरल पार्क का विकास किया गया है। वित्तीय वर्ष 2017 से 1 जुलाई 2023 तक कलस्टर आधारित औद्योगिक पार्कों एवं मिश्रित भू-उपयोग में कुल 2098 औद्योगिक ईकाईयों की स्थापना हेतु । भूमि का आवंटन किया गया है। इन उद्योगों के स्थापना से प्राधिकरण क्षेत्र में लगभग रु. 18356.74 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त होगा तथा 353989 लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी।
- **मेडिकल डिवाईस पार्कः** भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत मेडिकल डिवाईस पार्क की स्थापना यमुना एक्सप्रेस प्राधिकरण द्वारा सेक्टर-28 में की जा रही है। परियोजना की कुल लागत रु. 439.40 करोड़ (भूमि लागत को छोड़कर) है। मेडिकल डिवाईस पॉलीसी के अन्तर्गत रु. 100 करोड का ग्रान्ट भारत सरकार द्वारा दिया जाना है जिसके सापेक्ष रु. 30 करोड़ प्राप्त हो चुके हैं। मेडिकल डिवाईस पार्क में इकाईयों की स्थापना के लिए भारत सरकार द्वारा सैद्धान्तिक अनुमति में वर्णित विशेष प्रोत्साहन लाभ प्रदान करने हेतु फार्मास्यूटिकल मैन्यूफैक्चरिंग नीति-2018 (यथा संशोधित) के प्रस्तर-12.5 के तहत प्रस्ताव पर मा. मंत्री परिषद् द्वारा दिनांक 14.06.2022 को अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। Scheme For Promotion of Medical Devices Park के अनुसार मेडिकल डिवाइस पार्क योजना 02 वर्ष में क्रिन्यान्वित की जानी है। मेडिकल डिवाईस पार्क योजना के अन्तर्गत फेज-1 में 37 एवं फेज-2 में 25 भूखण्डों का आवंटन हो चुका है। इस योजना में लगभग 3800 करोड़ का निवेश प्राप्त होगा साथ ही 15000 रोजगार का सृजन होगा।
- **इन्टरनेशनल फिल्म सिटीः** इन्टरनेशनल फिल्म सिटी की स्थापना उ.प्र. शासन के निर्देश के क्रम में यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण क्षेत्रान्तर्गत सैक्टर-21 में की जानी प्रस्तावित है जिसकी कार्यवाही गतिमान है।
- **हेरीटेज सिटीः** राया नगरीय केन्द्र (वृन्दावन) प्राधिकरण की महायोजना में शासन द्वारा अनुमोदित है, जहाँ प्राधिकरण द्वारा हेरीटेज सिटी के रूप में विकास किये जाने की योजना है। इसके अध्ययन हेतु M/s CBRE South Asia Pvt. Ltd. को परामर्शदाता के रूप में चयन किया गया है। ब्रज विकास परिषद के सुझाव पर इसका विकास श्री बांकेबिहारी मंदिर के समीप ग्रीनफील्ड एरिया में किया जाएगा जहाँ पर पूर्व से ही भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित कई पौराणिक स्थल मौजूद हैं। इस योजना में यमुना एक्सप्रेसवे से श्री बांकेबिहारी मन्दिर हेतु ग्रीनफील्ड कनेक्टविटी प्रदान की जाएगी साथ ही रिवर फ्रन्ट, योग केन्द्र, प्रार्थना स्थल आदि का भी विकास हेरीटेज सिटी में सम्मिलित है। इसका DPR कंसलटेन्ट द्वारा तैयार किया जा रहा है। DPR के अनुमोदन के उपरान्त विकासकर्ता का चयन पी.पी.पी. मोट पर किया जाएगा।
- **नोयडा इन्टरनेशनल एयरपोर्ट, जेवरः** नोयडा इन्टरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर नागरिक उड्डयन विभाग, उ.प्र. शासन की पी.पी.पी. मोड पर आधारित परियोजना है। इसका विकास प्राधिकरण के मास्टर प्लान क्षेत्र इन्टरनेशनल एयरपोर्ट एण्ड एविएशन हब के अन्तर्गत 1334 हेक्टेयर क्षेत्र में जेवर के निकट किया जा रहा है। इस हेतु 1334 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया जा चुका है तथा भारत सरकार की विभिन्न एजेंसियों से सभी प्रकार की एन.ओ.सी. एवं इन्वायरमेंट क्लीरेन्स प्राप्त हो चुका है। ग्लोबल बिडिंग प्रकिया से Zurich Airport International AG का चयन कंसेशनायर/ विकासकर्ता के रूप में किया गया है। समस्त भूमि का कब्जा विकासकर्ता को प्रदान किया जा चुका है तथा विकास हेतु Master Plan एवं Development Plan अनुमोदित किया जा चुका है। वर्तमान में विकासकर्ता Yamuna International AirportPvt. Ltd. जो Zurich Airport International AG की SPV है के द्वारा Terminal Building, रनवे, ATC Building के निमार्ण कार्य किया जा रहा है। प्रथम चरण में 12 मिलियन यात्रियों के लिए एयरपोर्ट का निर्माण होगा जिसमें रु. 5730 करोड़ की धनराशि कम्पनी द्वारा व्यय की जाएगी। एयरपोर्ट की स्थापना से औद्योगिक अवस्थपना का संरचनात्मक विकास होगा, जिससे रोजगार के अवसर बढेंगें, विनिर्माण एवं निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा तथा हवाई यातायात सुगम होगा साथ ही पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- **पीआरटी प्रोजेक्टः** भारत की पहली पीओडी टैक्सी पर्सनल रैपिड ट्रांजिट, जिसे प्रोडाकार्स भी कहा जाता है, एक सार्वजनिक परिवहन माध्यम है जिसमें विशेष रूप से निर्मित गाइडवेज़ के नेटवर्क पर चलने वाले छोटे स्वचालित वाहन शामिल हैं।

  पीआरटी की अनूठी विशेषताओं में शामिल हैं:
  - ऑन-डिमांड सर्विस
  - नॉन-स्टॉप यात्रा
  - पतला और सहज बुनियादी ढांचा,
  - शॉर्टर हैडवेज
  - हायर ट्रेवल स्पीड्स
  - स्केलेबल नेटवर्क
- **ग्रामों का सेक्टरों की तर्ज पर स्मार्ट विलेज के रूप में विकासः** प्रथम फेज में प्राधिकरण द्वारा अधिग्रहित क्षेत्र के कुल 29 औद्योगिक नगरों को स्मार्ट विलेज के रुप में विकसित किया जाना प्रस्तावित है। 02 औद्योगिक नगरों निलौनी एवं रामपुर बांगर का कार्य पूर्ण करा दिया गया है। 06 औद्योगिक नगरों (मिर्जापुर, डूँगरपुर रीलका, अच्छेजा बुजुर्ग, सलारपुर, रूस्तमपुर, मूंजखेडा एवं चपरगढ़ माजरा - मिर्जापुर) में कुल रु.5209.27 लाख के विकास कार्य प्रगति में हैं। मुरादगढ़ी व गुनपुरा के कार्य की निविदा स्वीकृति हो चुकी है, जिसके सिविल कार्य की लागत रु. 725.79 लाख है। 07 औद्योगिक नगरों के प्राक्कलन तैयार कर प्रक्रियाधीन है। शेष 12 औद्योगिक नगरों के प्राक्कलन तैयार किया जाना प्रस्तावित है।
- **प्राधिकरण के 96 औद्योगिक नगरी क्षेत्रों के अन्तर्गत स्कूलों के कायाकल्प के कार्यः** ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत परिषदीय विद्यालयों को अवस्थापना सुविधाओं से संतृप्त कराये जाने हेतु बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा कराये गये सर्वे में 14 मानकों के अन्तर्गत 89 प्राईमरी स्कूल तथा 34 जूनियर हाई स्कूल में कार्य प्रगति में है ।
- **अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयः** कृपया उपरोक्त विषयक कार्य हेतु जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी गौतमबुद्धनगर के पत्रांक- एस.एस.ए. / निर्माण / 13459-69 / 2022-23, दिनांक 27.12.2022 द्वारा प्राधिकरण सीमा के अन्तर्गत आने वाले 15 विद्यालयों की सूची तैयार कर प्रस्तुत की गयी है, जिसमें नयी शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप At Grade Learning की अवधारणा के आधार पर उक्त चिन्हित विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों को विश्वस्तरीय एवं आधुनिक अवस्थापना सुविधाओं के साथ बेहतर शैक्षणिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करने के उददेश्य परिषदीय कम्पोजिट विद्यालयों को अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय के रूप में उच्चीकृत किये जाने हेतु प्रस्ताव प्रेषित किया गया है। इसके अन्तर्गत विद्यालय में 05 कक्षों से युक्त 01 एकीकृत भवन का निर्माण किया जाएगा, जहाँ निम्नलिखित आधुनिक अवस्थापना सुविधाओं को विकसित किया जाएगा:
  - Library with dedicated reading Corner
  - Computer lab with language lab solution
  - Modular composite (Math & Science) laboratory
  - High-tech Smart class by interactive display smart board with virtual class room
  - Staff room with attached toilet

  अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप डिजिटल शिक्षा पर विशेष ध्यान देने के उददेश्य से बच्चों को डिजिटल एजुकेशन प्लेटफार्म एवं डिजिटल लर्निंग के माध्यम से गुणवत्तापरख शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आधुनिक स्मार्ट क्लास शैटअप को भी तैयार किया जायेगा । प्राधिकरण द्वारा कुल 12 विद्यालयों को दो चरणों में अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों के रूप में विकसित किये जाने की कार्यवाही गतिमान है।

Yamuna Expressway Industrial Development Authority
YEIDA
FUTURE IS HERE

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉपलेक्स, पी-2, सैक्टर ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा 201308, जनपद-गौतमबुद्ध नगर

Tolfree No.: 1800 180 8296 **वेबसाईटः** www.yamunaexpresswayauthority.com

Robotic Surgery
With Both Experience & Precision

For Urology, Gynaecology, Cancer, Bariatric & General Surgeries

Benefits to patients

Faster Recovery | Reduced hospital stay | Reduced risk of wound infection
Minimal blood loss during surgery | Less damage to healthy tissue

YATHARTH
SUPER SPECIALITY HOSPITALS
GET BETTER

Sector Omega-1, Greater Noida | **Call 8800447777, 8826447777**